RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 11, Issue : 1, January 2019-June 2019

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

29वां स्थापना दिवस समारोह 06-08

प्रज्ञा संवर्द्धिनी व्याख्यानमाला 09

नेक टीम का मूल्यांकन दौरा 10-11

राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन 13-14

International Workshop with Taiwan Group 15

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत घोषित

मान्य विश्वविद्यालय

M.A. | M.S.W. | M.Phil. | Ph.D.

B.A./B.Com. | B.Sc. | B.A.-B.Ed B.Sc.-B.Ed | B.Ed.-M.Ed.

Placement Assistanc | Separate Hostels for Male & Femals | Scholarship Facility | Internet Facility | Coaching for Competition Exams

विशेषताएं

• राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा समाजोपयोगी कार्यक्रम • व्यक्तित्व विकास शिविर द्वारा मूल्यपरक शिक्षण एवं प्रशिक्षण • शैक्षिक भ्रमण • राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिताओं में सहभागिता • महाविद्यालय परिसर में युको बैंक व्यवस्था उपलब्ध • अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण जैसे पाठ्यक्रमों में रियायती शुल्क पर प्रशिक्षण • योग्य अनुभवी शिक्षक एवं प्रबुद्ध समर्पी वर्ग द्वारा विशेष अध्यापन • आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु प्रयोगशाला लेबोरेटरी • शान्त, सुरक्षित, अनुशासित एवं प्रदूषण मुक्त परिवेश • सभी पाठ्यक्रम यू.जी.सी. एवं भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त • संभाषण, लेखन, खेलकूद, साहसिक एवं रोमांचक खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में विशेष अवसर • समृद्ध एवं विशाल पुस्तकालय की व्यवस्था • छात्रावास एवं जिम की सुविधा • प्रथम विद्यार्थी का अध्ययन करने वाले छात्रों को स्कॉलरशिप देने का प्रावधान • प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रशिक्षण (NET, JRF, CA and CS) • विषयों से सम्बन्धित विशेष कोचिंग कक्षाएं।

नियमित पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

एम.ए.

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ दर्शन ▸ संस्कृत ▸ प्राकृत ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ क्लीनिकल साइकोलॉजी ▸ अहिंसा एवं शान्ति ▸ राजनीतिक विज्ञान ▸ समाज कार्य ▸ अंग्रेजी ▸ एम.एड. (उपरोक्त सभी विषयों में पीएच.डी. सुविधा)

एम.फिल.

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ प्राकृत एवं जैन आगम

स्नातक पाठ्यक्रम

▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम. ▸ बी.एस.सी. ▸ बी.ए.-बी.एड. ▸ बी.एससी-बी.एड.
▸ बी.एड. (केवल महिलाओं के लिए)

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

▸ स्टडीज इन जैनिज्म ▸ नेचुरोपैथी ▸ प्रेक्षा योग थैरेपी ▸ एन.जी.ओ. मैनेजमेण्ट ▸ बैंकिंग ▸ रूरल डेवलपमेण्ट ▸ जेण्डर इम्पॉवरमेण्ट ▸ कॉरपोरेट सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी ▸ ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेण्ट ▸ काउन्सलिंग एण्ड कम्युनिकेशन ▸ राजभाषा अध्ययन

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

▸ प्राकृत ▸ संस्कृत ▸ योग एवं प्रेक्षाध्यान ▸ जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग शिक्षा ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ जर्नलिज्म एण्ड मास मीडिया ▸ ऑफिस ऑटोमेशन एण्ड इंटरनेट ▸ फोटोशॉप ▸ एचटीएमएल- वेब डिजाईनिंग

पत्राचार पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ शिक्षा ▸ हिन्दी ▸ राजनीति विज्ञान ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ अंग्रेजी

स्नातक पाठ्यक्रम

▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम.

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

▸ अहिंसा प्रशिक्षण ▸ अण्डरस्टेंडिंग रिलिजन ▸ जैन धर्म एवं दर्शन ▸ प्राकृत ▸ जैन आर्ट एंड एस्थेटिक्स ▸ ह्यूमन राइट्स ▸ प्रेक्षा लाईफ स्किल

फोन : 01581-226110, 224332, 226230 फैक्स : 227472 web : www.jvbi.ac.in e-mail : jvbiladnun@gmail.com

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्व भारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

मन की एकाग्रता से क्या मिलेगा ?

प्रश्न किया गया— एगग्गमणसन्निवेसणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? भंते! मन को एक अग्र पर केन्द्रित करने से जीव को क्या प्राप्त होता है? उत्तर दिया गया—**एगग्गमणसन्निवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ।** एक अग्र पर मन को केन्द्रित करने से चित्त का निरोध हो जाता है।

मन की दो अवस्थाएं होती हैं— व्यग्र और एकाग्र। जब मन के विभिन्न आलंबन बन जाते हैं, कभी यहां तो कभी वहां यानी वह भ्रमणशील रहता है, विकेन्द्रित हो जाता है, यह मन की व्यग्र अवस्था है। जब मन एक आलंबन पर केन्द्रित हो जाता है, वह मन की एकाग्र अवस्था है। आदमी अपने मन की चंचलता के कारण दुःखी भी बन सकता है और मन की एकाग्रता से सुखी भी बन सकता है। मन को एकाग्र बनाने के लिए, मन को वश में करने के लिए अपेक्षा है अन्तर्मन में वैराग्य भाव की उत्पत्ति।

हमारे मन में राग-द्वेष के भाव आ सकते हैं। किसी के द्वारा थोड़ी-सी प्रशंसा करने पर हम फूल जाते हैं, खुश हो जाते हैं और किसी के द्वारा कुछ निन्दा करने पर हमारे मन में आक्रोश आ जाता है, मन खिन्न भी हो सकता है। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि हमारे मन को सहन करने का अभ्यास नहीं है। अगर सहन करने का अभ्यास हो जाए तो फिर भले कोई प्रशंसा करे या निन्दा करे, हमारे मन पर ज्यादा असर नहीं होगा। हम अपनी कामनाओं, इच्छाओं पर संयम करें तो मन नियंत्रित हो सकता है। आदमी अपनी साधना के द्वारा, ध्यान के द्वारा मन को संयमित करने का और मन को एकाग्र बनाने का प्रयास करे। यद्यपि कई बार मन एकाग्र होता भी है। उदाहरणार्थ - एक व्यक्ति जब रुपये गिनता है तब उसका मन कितना एकाग्र हो जाता है। वहां मन की एकाग्रता रूपयों के साथ जुड़ गई। वही मन यदि भगवान के साथ जुड़ जाए तो कितनी बड़ी बात हो जाए। जो मन विषयों में एकाग्र होता है, शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श में एकाग्र होता है, वह मन आत्मा के साथ जुड़ जाए, परम तत्त्व के साथ जुड़ जाए तो आदमी का कल्याण हो सकता है।

आर्षवाणी में सुन्दर कहा गया है कि एक आलम्बन पर मन को केन्द्रित करने से चित्त का निरोध होता है, चित्त शांत होता है। चित्त का निरोध हो जाने से आदमी को परम समाधि और शांति मिल जाती है।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

उद्देश्यों के प्रति समर्पित रहकर प्रगति पथ पर अग्रसर है जैन विश्वभारती संस्थान

01. 29वाँ स्थापना दिवस समारोह 06-08
02. प्रज्ञा संवर्द्धिनी व्याख्यान माला 09
03. नैक टीम का तीन दिवसीय मूल्यांकन दौरा 10-11
04. संस्थान के प्राकृत विद्वानों को मिला राष्ट्रपति सम्मान 12
05. प्रो. दामोदर शास्त्री केन्द्र सरकार के प्राकृत भाषा बोर्ड में शामिल 12

जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग

06. दो दिवसीय राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन एवं सम्मान समारोह आयोजित 13-14
07. इंटरनेशनल वर्कशॉप विद् ताईवान ग्रुप 15
08. प्रमाण मीमांसा ग्रन्थ पर 7 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला 16-17
09. पाण्डुलिपी संरक्षण केन्द्र की स्थापना 17
10. महाविनाश से बचने के लिए महावीर के सिद्धांतों को अपनाना होगा 18

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग

11. दस दिवसीय संस्कृत संभाषण कार्यशाला आयोजित 19-20
12. रिसर्च ओरियेंटेशन वर्कशॉप आयोजित 21
13. जैन स्कॉलर योजना में 11 दिवसीय कार्यशाला 21

समाज कार्य विभाग

14. पर्यावरण सुरक्षा पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 22-23
15. प्लेसमेंट शिविर का आयोजन 23

अहिंसा एवं शांति विभाग

16. तीन दिवसीय अहिंसा, शांति व मानवाधिकार पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित 24-25

शिक्षा विभाग

17. उन्नत भारत अभियान पर शिक्षण कार्यक्रम 26
18. छात्राध्यापिकाओं का शुभभावना समारोह आयोजित 27

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय

19. अखिल भारतीय अन्तर्महाविद्याल वाद-विवाद प्रतियोगिता 28
20. कॅरियर फेयर एवं यूथ फेस्टीवल का आयोजन 29
21. शैक्षणिक भ्रमण दल का माउण्ट आबू - सिरोही भ्रमण 29
22. अन्तर्विद्यालयी नृत्य प्रतियोगिता आयोजित 30-31
23. विदाई समारोह आयोजित 31
24. कॅरियर परामर्श व्याख्यान/एक दिवसीय कार्यशाला 32
25. अभिभावक शिक्षक बैठक /व्याख्यानमाला 33
26. अन्तर्विद्यालयी स्वरचित कविता कहानी प्रतियोगिता 34-35
27. शहीद भगतसिंह की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम 35

संस्थान की अन्य विविध गतिविधियाँ

28. विश्वविद्यालय के दो विद्यार्थियों ने योग में फिर बनाया विश्व रिकॉर्ड 36
29. उत्तर भारत चैम्पियनशिप में संस्थान के विद्यार्थियों ने स्वर्ण व रजत पदक हासिल किया 36
30. समारोह पूर्वक मनाया वसंत पंचमी उत्सव 37
31. धूमधाम से मनाया गणतंत्र दिवस 37
32. चार दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं आयोजित 38
33. नव वर्ष पर कार्यक्रम 39
34. विश्वमातृ भाषा दिवस पर समारोह आयोजित 39
35. मंगल भावना समारोह आयोजित 40
36. महिलाओं के यौन उत्पीड़न पर एक दिवसीय कार्यशाला 41
37. प्रधानमंत्री की 'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम 41
38. अल्पकालिक टेली व इंग्लिश स्पोकन कॉर्सेज का संचालन/हेयर स्टाईल प्रशिक्षण 42

एन.एस.एस./एन.सी.सी.

39. सात दिवसीय एन.एस.एस. शिविर का आयोजन 43-46
40. एन.सी.सी. छात्राओं का सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 46
41. एन.एस.एस. का एक दिवसीय शिविर 46

योग दिवस

42. उपखण्ड स्तरीय अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह आयोजित 47

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान

वर्ष-11, अंक-1
जनवरी- जून, 2019

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
डॉ समणी भास्कर प्रज्ञा

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं – 341306
नागौर, राजस्थान
दूरभाष : (01581) 226110 226230
फैक्स : (01581) 227472
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

उद्देश्यों के प्रति समर्पित रहकर प्रगति पथ पर अग्रसर है जैन विश्वभारती संस्थान

जैन विश्वभारती संस्थान आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिकता के प्रसार का जो कार्य कर रहा है, वैसा अन्य उदाहरण दुर्लभ है। संस्थान के 29वें स्थापना दिवस पर वर्द्धमान महावीर ओपन युनिवर्सिटी कोटा के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच ने अपने सम्बोधन में इसी बात को महत्त्व दिया। उन्होंने कहा, नैतिकता की प्रासंगिकता को सिद्ध करने वाला यह संस्थान अद्वितीय है। यहां आचार को प्रमुख मानते हुये शिक्षा और ज्ञान प्रदान किया जाता है। यही कारण है कि यहां के सभी विद्यार्थी अनुशासित, संस्कारवान और चरित्रवान हैं।

संस्थान के द्वितीय अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के जन्मशताब्दी वर्ष को संस्थान ने समारोह पूर्वक मनाये जाने की कार्ययोजना तैयार की है, साथ ही इस अवसर पर उनके अवदानों का लाभ जन-जन तक पहुंचाने के लिये कृतसंकल्प भी है। संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने इस सम्बंध में आचार्यश्री महाप्रज्ञ की पुस्तकों के वितरण एवं देश-विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में व्याख्यान के आयोजन की महती योजना बनाई है। इस जन्मशताब्दी वर्ष में संस्थान में मेडिकल कॉलेज आफ नेचुरोपैथी एंड योग की शुरूआत करना भी इसी में शामिल है।

कुलपति के निर्देशन में नित नये प्रयोगों में यहां पांडुलिपि संरक्षण केन्द्र की स्थापना को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। संस्थान के पास 6000 पांडुलिपियों को संरक्षित करने का कार्य चल रहा है तथा इनके अलावा आस-पास के क्षेत्र में मंदिरों, पुस्तकालयों, व्यक्तिगत स्तर पर पांडुलिपियों का पता लगाकर उन्हें संरक्षित करने की प्रक्रिया भी की जाएगी। इस विश्वविद्यालय को यथासंभव पेपरलेस बनाकर पर्यावरण के क्षेत्र में एक बड़ा कदम उठाने की तैयारियां हैं। विश्वविद्यालय की इंटरनेशनल नेटवर्किंग को सुसंगठित करने, पूर्व छात्रों का संस्थान के विकास में सहयोग लेना, सुविधाओं का विस्तार करने आदि द्वारा गुणवत्ता वृद्धि के लिए विश्वविद्यालय निरन्तर प्रयासरत है।

जैन विद्या, दर्शन शास्त्र, प्राकृत व संस्कृत भाषा, अहिंसा व अनेकांत, योग व जीवन विज्ञान आदि के क्षेत्र में विकास के लिये संस्थान निरन्तर सक्रिय है। जैन विद्या के उत्थान के लिये प्रमाण मीमांसा ग्रंथ पर सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के आयोजन द्वारा जैन न्याय विद्या की पुनर्स्थापना का प्रयास किया गया। ''जैन ज्योतिष की विविध विधायें'' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन का आयोजन किया जाकर जैन ज्योतिष के उत्थान का उल्लेखनीय प्रयास किया गया, जिसके लिये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ को अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान द्वारा ''सुजला रत्न सम्मान'' से नवाजा गया। दस दिवसीय संस्कृत सम्भाषण कार्यशाला, अहिंसा-शांति व मानवाधिकार प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन, पर्यावरण सुरक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, प्रज्ञा संवर्द्धिनी व्याख्यानमाला में राजस्थान पत्रिका समूह के मुख्य सम्पादक डा. गुलाब कोठारी का ''समाज को आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान'' विषय पर व्याख्यान आदि विविध राष्ट्रीय स्तर की गतिविधियां इस संस्थान को नई उंचाईयां प्रदान करती हैं और अपने उद्देश्यों के प्रति समर्पण को उजागर करती है।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नेक) के विशेषज्ञ विद्वानों की टीम ने विश्वविद्यालय की सराहना की। टीम ने संस्थान के इंफ्रास्ट्रक्चर, अनुशासन, कार्मिकों को दी जा रही सुविधाओं, विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध सुविधाओं, वातावरण, पुस्तकालय आदि की सराहना की। नेक टीम ने अपनी रिपोर्ट में विश्वविद्यालय को प्राच्य विद्या, जैनोलोजी, प्राकृत व संस्कृत, अहिंसा व शांति, योग व जीवन विज्ञान, नैतिकता आदि क्षेत्रों में बहुत ही बढिया काम करने वाला संस्थान बताया। यहां के प्राकृत विद्वानों प्रो. दामोदर शास्त्री को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया और डा. योगेश जैन को राष्ट्रपति ने महर्षि बादरायण व्यास पुरस्कार से सम्मानित किया। संस्थान के विद्वान प्रो. दामोदर शास्त्री को केन्द्र सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के अन्तर्गत गठित प्राकृत भाषा विकास बोर्ड में सदस्य के रूप में शामिल करके जैन विश्वभारती संस्थान का सम्मान बढाया है। इस प्रकार यह संस्थान सुयोग्य प्रशासन के हाथों में सुरक्षित है और निरन्तर प्रगतिशील है।

– डॉ समणी भास्कर प्रज्ञा

धूमधाम से मनाया 29वां स्थापना दिवस समारोह

समस्याओं के समाधान को नये ढंग से सोचने वाला ही सफल– प्रो. नरेश दाधीच

संस्थान के 29वें स्थापना दिवस पर 18 मार्च को आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि वर्द्धमान महावीर ओपन यूनिवर्सिटी, कोटा के पूर्व-कुलपति एवं प्रदेश कांग्रेस कमेटी के विचार विभाग के प्रदेशाध्यक्ष प्रो. नरेश दाधीच ने कहा, किसी व्यक्ति के समाज में सफल होने के लिये केवल कागजी शिक्षा ही आवश्यक नहीं है, बल्कि जीवन के हर अनुभव से ग्रहण की जाने वाली शिक्षा महत्वपूर्ण होती है। समस्या के समाधान को नये तरीके से करने वाला व्यक्ति ही आगे बढ़ सकता है। महान व्यक्ति का जन्म अलग से नहीं होता, बल्कि उनका समस्याओं के प्रति अलग दृष्टिकोण होता है, जिससे उनकी महान बनने की संभावनायें बनती हैं। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी द्वारा प्रणीत यह विश्वविद्यालय जैन विद्या के अलावा आधुनिक शिक्षा के साथ नैतिकता का पाठ युवाओं को पढ़ा रहा है। इस दृष्टि से यह अद्वितीय संस्थान है। वर्तमान में दुनिया में नैतिकता का अभाव हो रहा है, इसमें संस्थान यह सिद्ध कर रहा है कि नैतिकता आज भी प्रासंगिक है।

नेचुरोपैथी एवं योगा थैरेपी कॉलेज की होगी स्थापना

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने समारोह की अध्यक्षता करते हुये अपने सम्बोधन में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के दौरान इस विश्वविद्यालय में आचार्य महाप्रज्ञ कॉलेज एंड हॉस्पिटल आफ नेचुरोपैथी एंड योगा थैरेपी की स्थापना होने जा रही है। इसके अलावा संस्थान द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ जयंती शताब्दी वर्ष के अवसर पर देश-विदेश में व्याख्यानों का आयोजन एवं पुस्तकों का प्रकाशन किया जायेगा। हमने लक्ष्य रखा है कि अपने शिक्षकों की क्षमताओं को और अधिक बढ़ाने और नई ऊर्जा को उजागर करने का कार्य करेंगे। विद्यार्थी सुविधाओं का विस्तार किया जायेगा। विश्वविद्यालय में प्लेसमेंट अधिकारी की नियुक्ति की जायेगी, ताकि युवाओं को रोजगार की सुविधा उपलब्ध हो सके। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की इंटरनेशनल नेटवर्किंग एवं एल्युमिनी एसोसियेशन को सुसंगठित करके पूर्व छात्रों का संस्थान के विकास में उपयोग लिया जाने का प्रयास किया जायेगा।

प्रो. दूगड़ ने पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिये घोषणा की कि विश्वविद्यालय में समस्त कार्यालयीन कार्य को यथासंभव पेपरलेस किया जायेगा। संस्थान को उच्च मानकों तक ले जाने के लिये सारा स्टाफ सक्रिय हैं। उन्होंने सबसे आग्रह किया कि अपने क्षेत्र में नवाचार करें और नये-नये प्रयोग करें। नई सोच चाहे छोटी ही क्यों न हो, वह बड़े परिणाम दे सकती है।

सम्मान और पुस्तक विमोचन

कार्यक्रम में समणी नियोजिका समणी मल्लिप्रज्ञा ने बताया कि विश्वविद्यालय में सभी एक परिवार की तरह से रह रहे हैं। जैन विश्व भारती के सहमंत्री जीवनमल मालू ने मूल्य शिक्षा एवं नैतिकता को समर्पित संस्थान को विदेशों तक में प्रख्यात बताया। प्रारम्भ में कुलसचिव रमेश कुमार दाधीच ने वार्षिक प्रगति विवरण प्रस्तुत किया तथा बताया कि अपनी स्थापना से लेकर विश्वविद्यालय निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ रहा है। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया एवं डा. जुगलकिशोर दाधीच ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। समणी प्रणव प्रज्ञा ने मंगल संगान करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम में समाजसेवी भागचंद बरड़िया विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रपति द्वारा पांच लाख की राशि से सम्मान के लिये चयन किये जाने पर प्रो. दामोदर शास्त्री, राष्ट्रपति द्वारा एक लाख के पुरस्कार के लिये चयन किये जाने पर डा. योगेश जैन, मानवाधिकार आयोग द्वारा घरेलु हिंसा पुस्तक को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत किये जाने पर डा. वीरेन्द्र भाटी एवं महिला छात्रावास की वार्डन गीता पूनिया को सम्मानित किया गया। इसके अलावा श्रेष्ठ शिक्षक अवार्ड के लिये डा. भावाग्रही प्रधान, श्रेष्ठ कर्मचारी अवार्ड के लिये सुरेन्द्र काशलीवाल, मदनसिंह तथा श्रेष्ठ विद्यार्थी अवार्ड के लिये अधिस्नातक वर्ग में प्रवीणा राठौड़ व स्नातक वर्ग में सरिता शर्मा को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विजेता रहने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी द्वारा लिखित पुस्तक ''बाल कथा संसार'' एवं डा. आभासिंह व डा. गिरधारी लाल द्वारा लिखित पुस्तक '' शिक्षा में निर्देशनः परामर्श एवं सांख्यिकी'' का अतिथियों ने विमोचन किया। कार्यक्रम में बेटी-बचाओ, बेटी-पढ़ाओ अभियान की जिला संयोजक सुमित्रा आर्य, रमेश सिंह राठौड़, सुशील कुमार पीपलवा, राजेन्द्र माथुर, अभयनारायण शर्मा, आरके जैन, पंकज भटनागर आदि उपस्थित थे। अंत में प्रो. अनिल धर ने आभार ज्ञापित किया।

छात्राओं की नृत्य प्रस्तुतियों ने किया मोहित

समारोह के द्वितीय चरण में सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन में योग के विभिन्न आसनों की आकर्षक प्रस्तुति ने सबको अचम्भित किया और उन्हें मुक्त कंठ से सराहा गया। विश्वविद्यालय के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने मंच पर सामुहिक रूप से विभिन्न यौगिक क्रियाओं और आसनों का आकर्षक प्रस्तुतिकरण किया, जिनमें लगभग सारे आसन एक साथ आ गये। इसके अलावा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति में देश भक्ति एवं राष्ट्रीय एकता से ओतप्रोत नृत्य-गीत आदि समाहित रहे। कार्यक्रम में उषा एवं समूह ने पैरोडी गीतों पर आधारित देशभक्ति गीत व नृत्य प्रस्तुत किया। मेहनाज एवं समूह ने "संदेशे आते हैं....." गीत पर नृत्य की प्रस्तुति दी।

नाटक से दिया स्वच्छता का संदेश

मुमुक्षु छात्राओं ने नाटिका की प्रस्तुति करते हुये स्वच्छता का संदेश दिया और 'स्वच्छ भारत' नारे का महत्त्व समझाया। इसी प्रकार समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों ने भी अपनी नाटक की प्रस्तुति में स्वच्छता को आधार बनाया तथा सब दर्शकों को स्वच्छता का खयाल रखने के लिये जागरूक किया। खुशनुमा समूह ने मारवाड़ी पैरोडी गायन के साथ राजस्थानी नृत्य की प्रस्तुति दी। दक्षता एवं समूह ने बॉलीवुड के गानों पर आधारित शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किया। नीलोफर समूह ने पंजाबी नृत्य, मुस्कान समूह ने राजस्थानी नृत्य एवं महिमा समूह ने होली गीतों पर आधारित नृत्य पेश किया। मीनू रोडा ने 'माही तेरी चुनरिया....' गीत पर एकल नृत्य पेश किया। जौहरा फातिमा एवं समूह ने कार्यक्रम में -भर दे झोली मेरे या....' कव्वाली प्रस्तुत करके वाह-वाही लूटी। संध्या एवं समूह ने 'अटक-अटक....' गीत पर अर्धनारीश्वर नृत्य प्रस्तुत करके दर्शकों से खूब दाद पाई। प्रारम्भ में सरिता एवं समूह ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रतिष्ठा एवं समूह द्वारा गणेश वंदना करके किया गया। कार्यक्रम में कुल 15 समूहों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं।

सकारात्मक विचार जीवन के हर मोड़ पर आवश्यक- प्रो. भोगा

आरटीएम नागपुर विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान के आचार्य प्रो. एसएस भोगा ने सकारात्मक सोच को जीवन के हर मोड़ पर आवश्यक बताते हुये कहा कि जिस कार्यस्थल पर हम काम करते हैं, वहां पर रचनात्मक विचारों का प्रवाह रहने पर वातावरण में बदलाव संभव हो पाता है। उन्होंने कहा कि अपने कार्यस्थल के उद्देश्यों, नीतियों व कार्यक्रमों को लेकर पूरी निष्ठा बनाये रखने पर कर्मचारी स्वयं का विकास व भला कर सकता है।

वे यहां संस्थान में 29 जनवरी को शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक कर्मचारियों में उनकी कार्यक्षमता बढाने के सम्बंध में उन्हें सम्बोधित कर रहे थे। प्रो. के.एस. भारती नागपुर ने इस अवसर पर कहा कि प्रत्येक संस्थान का यह दायित्व होता है कि वह अपने कार्मिकों को दी जाने वाली समस्त आवश्यक सुविधाओं के प्रति सचेत रहे। कर्मचारियों के प्रति प्रबंधन का मित्रवत् व्यवहार ही उनमें कार्यकुशलता बढाने में सहायक बनता है। इसके साथ ही कर्मचारियों का दायित्व भी होता है कि वे अपने संस्थान व प्रबंधन के प्रति पूर्ण विश्वसनीय और ईमानदार रहें।

हिमाचल केन्द्रीय विश्व-विद्यालय धर्मशाला के समाज कार्य विभाग के डा. आशुतोष प्रधान ने कहा कि कर्मचारियों का व्यवहार केवल वैयक्तिक ही नहीं, बल्कि सामूहिक रूप से भी महत्त्वपूर्ण होता है। इसके लिये उन्हें सदैव सावधानीपूर्वक व निष्ठावान रह कर ही कार्य करना चाहिये। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नाक) द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन के बारे में जानकारी दी।

प्रज्ञा संवर्द्धिनी व्याख्यानमाला आयोजित

धर्म को प्राचीरों से बाहर निकालना होगा- डा. कोठारी

संस्थान के महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ के तत्त्वावधान में 9 अप्रेल को आयोजित आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा संवर्द्धिनी व्याख्यानमाला के अन्तर्गत ''समाज को आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान'' विषय पर यहां ऑडिटोरियम में राजस्थान पत्रिका समूह के मुख्य-सम्पादक प्रखर विद्वान् डा. गुलाब कोठारी का व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान में डा. कोठारी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने समाज को रूपांतरित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया, लेकिन इसके लिये उन्होंने कभी भी स्वयं को आगे नहीं रखा, क्योंकि जो अपने को गौण रख कर चलता है, वही बड़ा हुआ करता है। जो खुद के लिये जीता है, उससे छोटा आदमी धरती पर कोई नहीं होता। प्रत्येक बीज पेड़ बनना चाहता है, लेकिन उसके लिये जरूरी है कि वह स्वयं को जमीन में गाड़ देवे। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा पर चर्चा करते हुये कहा कि अहिंसा तभी आ सकती है, जब हम हिंसा के कारणों को दूर कर देवें। जब तक हिंसा के संस्कार समाप्त नहीं होंगे, अहिंसा नहीं आ सकती, इसके लिये अहिंसा के संस्कार हमें भरने होंगे। डा. कोठारी ने महाप्रज्ञ की उदारवादी व समभाव प्रवृत्ति के बारे में बताते हुये कहा कि हमें संकुचित नहीं बनना चाहिये, बल्कि सभी मान्यताओं का सम्मान सीखना चाहिये। हमने महावीर के भी टुकड़े कर लिये हैं और संकीर्ण होते जा रहे हैं। दिगम्बर संत अपने आपको अपने पंथ के अनुयायियों से घिरा हुआ पाता है, तो वह खुश होता है और श्वेताम्बर संत अपने सम्प्रदाय के लोगों के बीच खुश रहते हैं। इस प्रकार की भावना से बाहर निकलने की जरूरत है। धर्म को हमें प्राचीरों से बाहर निकालना होगा।

अहिंसा का प्रतीक था महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में डा. कोठारी के प्रति आभार ज्ञापित किया तथा कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन में सरलता, समर्पण व सापेक्षता निहित थी। महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व ही ऐसा था कि उन्हें देखकर ही अहिंसा समझ में आ जाती थी और उनके विचारों और वक्तव्यों में सापेक्षता-अनेकांत का प्रयोग देखने को मिलता है। वे परस्परता के बारे में बताते थे। उनका

मानना था कि विरोध हमारे मन की कल्पना है। पक्ष के साथ प्रतिपक्ष आवश्यक होता है। दोनों पक्ष ही वैचारिक सौंदर्य होते हैं। उन्होंने विरासत को अक्षुण्ण रखने की आवश्यकता बताई।

कार्यक्रम में समाजसेवी भागचंद बरड़िया भी विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचस्थ थे। प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। शोधपीठ की निदेशिका प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने विषय प्रवर्तन किया तथा मुमुक्षु बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डा. योगेश कुमार जैन ने किया। व्याख्यानमाला में पर्यावरणविद् बजरंगलाल जेठू, ललित वर्मा, आलोक खटेड़, शांतिलाल बैद, लक्ष्मीपत बैंगानी, प्रो. बीएल जैन, डा. अमिता जैन, सुनिता इंदोरिया, डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. गिरीराज भोजक, डा. पंकज भटनागर, डॉ. पुष्पा मिश्रा, डा. भावाग्रही प्रधान आदि उपस्थित थे।

नेक की टीम का तीन दिवसीय मूल्यांकन दौरा

नैक ने प्राच्य विद्या, जैनोलोजी, प्राकृत व संस्कृत, अहिंसा व शांति, योग व जीवन विज्ञान, नैतिकता आदि के कार्यों का सराहा

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) के स्वायत्त संस्थान राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नेक) की टीम यहां अपने तीन दिनों के निरीक्षण दौरे पर जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) पहुंची। यहां टीम के सदस्यों का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ व कुलसचिव रमेश कुमार मेहता के नेतृत्व में स्वागत किया गया। टीम ने यहां 11 अप्रेल को विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संचालित जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग, प्राकृत व संस्कृत विभाग, अंग्रेजी विभाग, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग, अहिंसा एवं शांति विभाग, शिक्षा विभाग, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय आदि का अवलोकन किया। यहां टीम ने प्रारम्भ में कुलपति कांफ्रेस हॉल में कुलपति के साथ बैठक की, जिसमें कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उन्हें विश्वविद्यालय द्वारा संचालित शैक्षणिक व

गैरशैक्षणिक गतिविधियों, सुविधाओं आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी। प्रो. दूगड़ ने बताया कि यह विश्वविद्यालय सुदूर रेगिस्तानी इलाके में अनेक विपरीत परिस्थितियों के बावजूद उच्च शिक्षा की मुहिम को संचालित कर रहा है। विश्वविद्यालय ने मूल्यपरक शिक्षा के साथ गुणवत्ता को निरन्तर बनाये रखा है। उन्होंने विश्वविद्यालय की विगत पांच वर्षों की प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया।

पाठ्यक्रमों, इंफ्रास्ट्रक्चर, माहौल की खुलकर सराहना

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नेक) की टीम के विशेषज्ञ सदस्यों ने विश्वविद्यालय की आधारभूत संरचना, अनुशासन, कर्मचारियों की संतुष्टि, वातावरण आदि सभी बिन्दुओं की सराहना की। नेक की रिपोर्ट में

संस्थान की शक्तियों (मजबूत पक्ष) के रूप में बताया गया कि यहां छात्रों के लिए अच्छा माहौल है, शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक गतिविधियों के लिए अत्याधुनिक बुनियादी ढाँचा उपलब्ध है। जैन विद्या, जीवन विज्ञान, अहिंसा और प्राकृत और संस्कृत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया जा रहा है, विश्वविद्यालय की विस्तार और प्रगति सम्बंधी गतिविधियों में अच्छी भागीदारी है और यहां जैन धर्म पर प्राचीन पांडुलिपियों का संरक्षण सराहनीय है। इनके अलावा नेक टीम ने संस्थान की सफलता के रूप में जिन गतिविधियों का उल्लेख किया है, वे इस प्रकार हैं-

1. शैक्षणिक सदस्यों को वैज्ञानिक अनुसंधान शुरू करने के लिये प्रोत्साहित करने के लिए "स्टार्ट-अप ग्रांट"।
2. संस्थान के छात्रों को वित्तीय सहायता।
3. संस्थान के कर्मचारियों, छात्रों और समुदाय के लोगों के अच्छे स्वास्थ्य और सद्भाव के लिए नियमित ध्यान, योग और प्रार्थना का आयोजन।
4. छात्रों और कर्मचारियों के बीच नैतिकता और मूल्य आधारित जीवनशैली को बढ़ावा देने के लिए समणी और साधुओं का एक सक्रिय और अनूठा संघ।
5. शैक्षणिक एवं कैरियर विकास और मूल्य वृद्धि के लिए छात्राओं के विविध क्लबों का संचालन।

श्रेष्ठ है संस्थान का विजन, प्राथमिकतायें और रुझान

नेक टीम ने संस्थान की विशेषताओं में शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ प्राचीन भारतीय श्रमण संस्कृति की आध्यात्मिक विरासत के संश्लेषण पर विशेष जोर देना और छात्रों को प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता के आवश्यक मूल्यों और आदर्शों के बीच विकसित करना, संस्थान के विजन, प्राथमिकता और रुझान के साक्ष्य के तौर पर देखा।

नेक टीम ने संस्थान को बी-प्लस की ग्रेड प्रदान की है, जो नियमों की कड़ाई के चलते और राजस्थान के अन्य विश्वविद्यालयों से श्रेष्ठ रही है। टीम ने जो अपनी रिपोर्ट तैयार करके नेक के समक्ष प्रस्तुत की, वह संस्थान को 'ए-प्लस' ग्रेड के समकक्ष ठहराती है, लेकिन अन्य नियमों की कड़ाई के चलते संस्थान को यह ग्रेड नहीं देकर 'बी-प्लस' दी गई।

टीम ने संस्थान के इंफ्रास्ट्रक्चर, अनुशासन, कार्मिकों को दी जा रही सुविधाओं, विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध सुविधाओं, वातावरण, पुस्तकालय आदि की सराहना की। टीम की रिपोर्ट में प्रदेश के समस्त निजी विश्वविद्यालयों में संस्थान ने सबसे श्रेष्ठ ग्रेड हासिल की है।

देश के 25 श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में जैविभा विश्वविद्यालय 10वें स्थान पर

देश भर में किये गये निजी एवं मान्य विश्वविद्यालयों के सर्वे में यहां के जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) को 2019 के भारत की टॉप 25 विश्वविद्यालयों में दसवें स्थान पर शामिल किया गया है। यह सर्वे हायर एजुकेशन रिव्यू मैगजीन बैंगलोर द्वारा देश के 500 से अधिक निजी व मान्य विश्वविद्यालयों का किया गया था। जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) को शिक्षण, शोध, गुणवत्ता आदि दृष्टि से देश भर में उत्कृष्ट माना और देश के श्रेष्ठ 25 विश्वविद्यालयों में इसे शामिल किया जाकर 10वां स्थान दिया गया है। इस सम्बंध में हायर एजुकेशर रिव्यु की मैनेजिंग डायरेक्टर दीपशिखा सिंह ने प्रमाण पत्र प्रदान किया। इसके साथ ही इस मैगजीन में इस विश्वविद्यालय की विशेषताओं के बारे में दो पृष्ठों में आलेख भी प्रकाशित किया गया है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने इस उपलब्धि के लिये समस्त विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अन्य कार्मिकों को श्रेय प्रदान किया है। गौरतलब है कि इससे पूर्व सन 2014 में इसी मैगजीन द्वारा देश भर के विश्वविद्यालयों के सर्वे में देश के 25 श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में जैन विश्वभारती संस्थान को 17वां स्थान मिला था।

संस्थान के प्राकृत विद्वानों को मिला राष्ट्रपति सम्मान

संस्थान के दो विद्वानों को प्राकृत भाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय योगदान करने के लिये नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में 4 अप्रेल को आयोजित सम्मान समारोह में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इनमें से प्रो. दामोदर शास्त्री को 5 लाख रूपये का पुरस्कार तथा डा. योगेश कुमार जैन को 1 लाख रूपयों का पुरस्कार प्रदान किया गया। समारोह में उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडु ने उन्हें यह सम्मान प्रदान किया।

छह विद्वानों को किया गया सम्मानित

राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किये जाने वाले विद्वानों में लाडनूं के जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के दो विद्वान शामिल हैं। यह सम्मान प्राप्त करने वाले 6 विद्वानों में लाडनूं के जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के प्रो. दामोदर शास्त्री, पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी के अध्यक्ष प्रो. सागरमल जैन, सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय वाराणसी के जैन दर्शन एवं प्राकृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. फूलचंद जैन शामिल हैं तथा इनके अलावा युवा विद्वानों को महर्षि बादरायण व्यास राष्ट्रपति सम्मान प्रदान किया गया, जिनमें जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के सहायक आचार्य डा. योगेश कुमार जैन, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर के सहायक आचार्य डा. सुमत कुमार जैन व राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान मान्य विश्वविद्यालय, जयपुर के जैन दर्शन विभाग के सहायक आचार्य डा. आनन्द कुमार जैन शामिल हैं।

प्रो. दामोदर शास्त्री केन्द्र सरकार के प्राकृत भाषा बोर्ड में शामिल

केन्द्रीय सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के अन्तर्गत पालि व प्राकृत भाषाओं के विकास की योजना के तहत गठित किये गये 19 सदस्यीय प्राकृत भाषा विकास बोर्ड में लाडनूं के जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के प्रोफेसर दामोदर शास्त्री को विशेषज्ञ सदस्य के रूप में शामिल किया गया है। प्रो. शास्त्री के अलावा जैन विश्वभारती संस्थान के प्राकृत व संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष रह चुके प्रो. जगतराम भट्टाचार्य को भी इस बोर्ड में विशेषज्ञ सदस्य के रूप में शामिल किया गया है। प्रो. भट्टाचार्य वर्तमान में पं. बंगाल के शांति निकेतन विश्व भारती विश्वविद्यालय के संस्कृत, पालि व प्राकृत भाष विभाग के प्रोफेसर हैं। यह समिति भारत सरकार को प्राकृत भाषा व साहित्य के प्रचार-प्रसार, संरक्षण व विकास के सम्बंध में परामर्श प्रदान करेगी।

दो दिवसीय राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन एवं सम्मान समारोह आयोजित

पूरी दुनिया करती है जाने-अनजाने ज्योतिष का प्रयोग- डॉ. जैन

संस्थान के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग तथा अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में ''जैन ज्योतिष की विविध विधायें'' विषय पर 23 व 24 फरवरी को दो दिवसीय राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन विश्वविद्यालय स्थित महाप्रज्ञ- महाश्रमण ऑडिटोरियम में किया गया। सम्मेलन के शुभारम्भ समारोह की अध्यक्षता कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने की। मुख्य अतिथि डा. अनिल जैन, दिल्ली थे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सालासर धाम के डा. नरोत्तम पुजारी, पं. परमानन्द शर्मा, अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान के अध्यक्ष पं. चन्द्रशेखर शर्मा व प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा थी। सम्मेलन में देश भर के ख्यातिप्राप्त ज्योतिष विद्वानों ने हिस्सा लिया।

सौरमंडल से है मानव जीवन का सीधा रिश्ता

सम्मेलन के शुभारम्भ समारोह में मुख्य अतिथि डा. अनिल जैन ने बताया कि जाने-अनजाने पूरी दुनिया में ज्योतिष विज्ञान का उपयोग नियमित रूप से किया जा रहा है। सौरमंडल और मानव जीवन के बीच के सम्बंध पर अध्ययन किया जावे तो बहुत सी बातें सामने आयेंगी। हमें वेदों के हजारों साल पुराने ज्ञान को मानना चाहिये। समुद्र में आने वाले ज्वार और भाटा का सम्बंध सीधे सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति से है। अगर समुद्र की विशाल जलराशि को ये ग्रह प्रभावित कर सकते हैं तो मनुष्य को भी प्रभावित अवश्य करते हैं। वैज्ञानिक अध्ययन बताता है कि मानव शरीर में 70 प्रतिशत पानी होता है और शरीर में लवण की मौजूदगी समुद्री पानी के समान ही होती हैं। डा. जैन ने बताया कि डाक्टरों द्वारा सफेद कपड़े पहनने एवं ऑपरेशन थियेटर में हरे रंग के कपड़े पहनने के पीछे ज्योतिषीय राज है। हरा रंग बुध ग्रह का होता है, जो नर्वस सिस्टम को काबू में रखता है। न्यायालयों में जजों व वकीलों द्वारा काले कपड़े पहने जाते हैं, क्योंकि काला रंग शनि के लिये होता है और शनि ग्रह न्याय का ग्रह भी है। न्याय में सोच-समझकर निर्णय होना चाहिये।

कुलपति प्रो. दूगड़ को सुजला रत्न सम्मान

सम्मेलन में अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान की ओर से विशेष कार्यों के लिये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ को ''सुजला रत्न'' सम्मान से नवाजा गया और उन्हें प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न, सम्राट

पंचांग, शॉल आदि प्रदान किये गये। सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुये विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने सम्बोधन में कहा कि ज्योतिष का व्यावहारिक स्वरूप सबको प्रभावित करता है। वैदिक ज्योतिष और जैन ज्योतिष के आधार में कोई फर्क नहीं है। जैन ज्योतिष भी जन्म के समय के ग्रहों की स्थिति, हस्तरेखा, स्वप्न शास्त्र, शगुन शास्त्र आदि के आधार पर टिका है।

जैन शास्त्रों में दो विचारधारायें हैं। पहली में पूर्वकृत कर्मों के फल के प्रभाव को कम करना और दूसरी में ज्योतिष के माध्यम से पूर्व कर्म परिणामों को कम किया जाता है। दूसरे को निषिद्ध बताया गया है, क्योंकि वह ऋण करने और बाद में नहीं चुकाने के बराबर माना जाना है। इसलिये कर्मशांति के प्रयास करना तो उन्हें आगे टाल देना है।

उन्होंने इस अवसर पर बताया कि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय में जैन ज्योतिष पर एक अल्पकालीन पाठ्यक्रम संचालित किया जाना प्रस्तावित है, जिसके लिये पाठ्यपुस्तक व पाठ्यक्रम तैयार करने में सम्मेलन में समागत विद्वानों का सहयोग मिला तो वह लागू किया जायेगा।

अनुभूत प्रयोगों को अधिक महत्त्व दिया जाए

सालासर धाम के डा. नरोतम पुजारी ने बताया कि भार्गव ऋषि प्रणीत ज्योतिष शास्त्र को रावण ने अपनी रावण संहिता में सरल बनाया। उन्होंने ज्योतिष में नये मार्ग खोले जाने की आवश्यकता बताते हुये कहा कि ज्योतिष में मंत्र प्रयोग पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये। मानद मुख्य अतिथि पं. परमानन्द शर्मा ने कहा कि सभी ज्योतिषी पुराने ग्रंथों का भाष्य करते है, लेकिन नया शोध नहीं करते। उन्होंने ज्योतिष में अनुभूत प्रयोगों को ग्रंथों के सूत्रों से अधिक महत्त्व देने की आवश्यकता बताई। समारोह के प्रारम्भ में अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान के अध्यक्ष पं. चन्द्रशेखर शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया और अपने संस्थान के बारे में जानकारी दी। जैनविद्या विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने अपने स्वागत वक्तव्य में बताया कि भूत, भविष्य व वर्तमान तीनों को जोड़ने वाली विद्या ज्योतिष है, जिससे समस्याओं के समाधान के लिये मार्गदर्शन मिलता है।

निरन्तर शोध की आवश्यकता

समारोह के समापन समारोह की अध्यक्षता प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान के अध्यक्ष पं. चन्द्रशेखर शर्मा ने की तथा मुख्य अतिथि सालासर धाम के डा. नरोतम पुजारी थे। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में जोधपुर के डा. रमेश भोजराज द्विवेदी, प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, लता श्रीमाली, डा. ज्योति पुजारी व डा. योगेश कुमार जैन थे। समारोह में जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, संयोजक रमेश भोजराज द्विवेदी, डा. योगेश कुमार जैन तथा शोध पत्र प्रस्तुतीकरण करने पर पं. परमानन्द शर्मा, डा. मनीषा जैन, आचार्य विमल पारीक, डा. नरोतम पुजारी, पं. कृष्ण ओझा, नवेश वर्मा, डा. दीपक चोपड़ा आदि का सम्मान भी किया गया। समारोह में लता श्रीमाली ने कहा कि ज्योतिष एक विज्ञान है और इसमें निरन्तर शोध की आवश्यकता है। उन्होंने वैवाहिक स्थिति और मंगल दोष के बारे में विस्तार से अपने विचार व्यक्त किये। पं. परमानन्द शर्मा ने ज्योतिष की उन्नति के सूत्र बताये।

निःशुल्क ज्योतिष परामर्श में उमड़े

इस दो दिवसीय सम्मेलन में आये ज्योतिर्विदों ने सार्वजनिक रूप से सबको ज्योतिषीय परामर्श निःशुल्क रूप से उपलब्ध करवाने के लिये एक शिविर का आयोजन यहां महाप्रज्ञ सभागार में किया, जिसमें भारत भर से आये फलित ज्योतिष, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, सामुद्रिक शास्त्र, टेरो कार्ड रीडर, वास्तु शास्त्र, हस्तरेखा, रमल, लाल किताब, हस्ताक्षर आदि विधाओं के माध्यम से सर्वजन को निःशुल्क परामर्श प्रदान किया। विविध विद्वानों की निःशुल्क सेवाओं का लाभ उठाने के लिये यहां भारी संख्या में लोग उमड़े। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. योगेश जैन ने बताया कि सम्मेलन में विभिन्न क्षेत्रें के 150 से अधिक विद्वान मनीषियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के निदेशक प्रो. रमाकांत पांडेय, प्रो. भास्कर शर्मा श्रोत्रिय, पंडित दामोदर प्रसाद शर्मा, विनोद नाटाणी, अनिल स्वामी, सिम्मी सोनी, उमेश यशवंत शिखरे, कुमार देवेश, दीपक शास्त्री, राजेंद्र शास्त्री, विशाल शास्त्री, धर्मेंद्र खंडेलवाल, विजय बी. महाजन, भावीन बिपिन देसाई, हरदीप सिडाना, रुपिंदर पुरी, नंदकिशोर शर्मा आदि उपस्थित रहे तथा देश-विदेश की समस्याओं के बारे में ज्योतिषीय आधार पर विमर्श किया तथा जीवन की समस्याओं के हल पर चिंतन किया।

International Workshop with Taiwan Group

Department of Jainology and Comparative Religion & Philosophy of Jain Vishwa Bharti Institute, Ladnun has successfully organized One day Workshop 'Jain Way of Life' on January 25, 2019. The main purpose of the workshop was to focus on Jain Lifestyle. The workshop was well organized in which 50 delegates participated from Taiwan. In inaugural session Prof. Samani Riju Prajna, Head of the department extended her warm welcome to the delegates and defined the purpose of the workshop. Dr. Yogesh Kumar Jain described the fundamental principles of Jainism.

In next session Muni Jaikumar provided some guidelines for the process of meditation, including the importance of Preksha Meditation. Dr. Samani Amal Prajna conveyed her views on relevance of Jainism. She focused on the three main pillars of Jainism i.e. Non-violence, Non-Possession and Non-Absolutism and how they can be practically applied in life. Prof. Samani Riju Prajna clarified 12 small vows of a lay man and solved various queries of the delegates about Jainism.

The center of attraction of the workshop was an interactive session with Prof. B.R.Dugar, honorable Vice Chancellor of Jain Vishwa Bharti Institute. All delegates were benefitted with his valuable thoughts.

Afterwards the delegates were visited Central Library, Art gallery, Acharya Tulsi Samadhi Sthal, etc.

प्रमाण मीमांसा ग्रंथ पर सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

जैन न्याय के सभी अंग प्रासंगिक हैं- प्रो. भार्गव

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के आर्थिक सौजन्य से संस्थान के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग द्वारा प्रमुख जैन न्यायाचार्य आचार्य हेमचंद्र द्वारा प्रणीत 'प्रमाण मीमांसा' कृति पर आधारित सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 25 फरवरी से 3 मार्च तक किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ की अध्यक्षता तथा भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के चेयरमैन प्रो. एस.आर. भट्ट के मुख्य आतिथ्य में किया गया। मुख्य अतिथि प्रो. भट्ट ने इस अवसर पर दर्शन की प्राचीन तथा अर्वाचीन दोनों विधाओं पर प्रकाश डालते हुये भारत एवं पश्चिमी देशों में हो रहे भारतीय ग्रन्थों के अध्ययन एवं शोध पर प्रकाश डाला।

प्रो. दयानन्द भार्गव ने जैन-न्याय के सभी अंगों की प्रासंगिकता सिद्ध करते हुये संसद की कार्यवाही, न्यायालय की जिरह एवं अन्य नगर आदि में होने वाली पंचायतों के उद्धरणों को प्रस्तुत किया। आपने बहुत ही रोचक ढंग से न्याय के चारों अंगों यथा प्रमाण-प्रमेय-प्रमाता-प्रमिति एवं प्रमाण के अंग स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान एवं आगम प्रमाण की प्रासंगिकता तथा दैनिक जीवन में इनके उपयोग को स्पष्ट किया।

आधुनिक शैली प्राचीन विद्याओं का शिक्षण

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्राचीन विद्याओं के पठन-पाठन में आधुनिक शैली की उपयोगिता पर जोर दिया। उन्होंने प्राचीन विद्या के प्रचार-प्रसार के प्रति लगन एवं सहयोग के लिये भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली तथा चेयरमैन प्रो. भट्ट के प्रति आभार व्यक्त किया तथा सहयोग को निरंतर बनाये रखने के लिये अनुरोध भी किया। इससे पूर्व कार्यशाला की निदेशिका एवं जैन विद्या विभाग की अध्यक्षा प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने कार्यशाला के उद्देश्यों तथा प्रारूप पर प्रकाश डालते हुए विषय-प्रवर्तन किया।

कार्यशाला में अध्यापन के लिये इन विषय-विशेषज्ञों का सहयोग मिला-

1. प्रो. एस. आर. भट्ट, चेयरमैन, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
2. प्रो. दयानन्द भार्गव, जयपुर

3. प्रो. वीरसागर जैन, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली
4. प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई, विभागाध्यक्ष, जैनविद्या विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर
5. प्रो. धर्मचन्द्र जैन, सेवानिवृत्त, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
6. प्रो. दामोदर शास्त्री, अतिथि प्रोफेसर, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं
7. प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, विभागाध्यक्ष, जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं
8. डॉ. योगेश कुमार जैन, सहायक आचार्य, जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

प्राचीन विद्या के संरक्षण के लिये कार्यक्रम जरूरी

कार्यशाला में प्रतिदिन दो सत्रों में तीन-तीन घंटे अध्यापन कार्य कराया गया। समय-समय पर चर्चा सत्रों में प्रतिभागियों की शंकाओं का निवारण भी किया गया। कार्यशाला के अंत में परीक्षा के माध्यम से प्रतिभागियों द्वारा अर्जित

ज्ञान की परीक्षा भी ली गई। कार्यशाला का समापन 5 मार्च को प्रो. धर्मचन्द जैन, जोधपुर, प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी एवं कार्यशाला के संयोजक डा. योगेश कुमार जैन की उपस्थिति में किया गया, जिसमें कार्यशाला की रिपोर्ट विभाग की सहायक आचार्य डॉ. समणी अमलप्रज्ञा ने प्रस्तुत की। प्रो. धर्मचन्द जैन ने कार्यशाला के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा भविष्य में ऐसे आयोजनों का प्रस्ताव रखा जिससे प्राचीन विद्या का संरक्षण संभव हो सके। प्रो. त्रिपाठी ने दर्शन के महत्त्व के साथ-साथ भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के द्वारा किये जा रहे विभिन्न आयोजनों तथा कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला तथा इस कार्यशाला की सफलता के लिये प्रायोजक एवं आयोजक दोनों संस्थाओं तथा जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यशाला के समापन पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्रों का वितरण किया गया। कार्यशाला का प्रारम्भ जैन विश्वभारती संस्थान के कुलगीत से एवं समापन राष्ट्रगीत के साथ किया गया। कार्यशाला में दिल्ली, पश्चिम बंगाल, बिहार, पंजाब, महाराष्ट्र, राजस्थान आदि राज्यों के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से 50 प्रतिभागियों तथा संस्थान के 38 प्रतिभागियों सहित कुल 88 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की।

पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र की स्थापना

यत्र-तत्र फैली पांडुलिपियों का सूचीकरण व ट्रीटमेंट किया सकेगा

जैन विश्वभारती संस्थान में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन नई दिल्ली के सौजन्य से पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र का शुभारंभ अप्रेल माह के प्रथम सप्ताह में संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दुगड़ के सान्निध्य में किया गया। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति की धरोहर कहा जाने वाला अधिकांश भारतीय साहित्य आज भी पुरा-लिपियों में निबद्ध होकर पाण्डुलिपियों में ही सुरक्षित है। अब तक केवल 30 प्रतिशत पाण्डुलिपियों का ही संरक्षण राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के प्रयासों से संभव हो पाया है। पाण्डुलिपियों के संरक्षण, संवर्द्धन एवं रखरखाव के साथ उनके सूचीकरण का महनीय कार्य मिशन के द्वारा निरन्तर किया जा रहा है। संरक्षण एवं सूचीकरण की श्रृंखला को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से मिशन के सौजन्य से संस्थान में पाण्डुलिपि के पठन-पाठन को सरल बनाने हेतु इक्कीस दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था तथा इस कार्यशाला की सफलता के परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान के अनुरोध को स्वीकारते हुये पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र खोलने की अनुमति प्रदान की थी तथा इस कार्य के लिये तीन वर्ष के अनुबंध के साथ इक्कीस लाख रूपये देना सुनिश्चित किया।

पांडुलिपियों का उचित ट्रीटमेंट करेगा केन्द्र

ज्ञात रहे कि संस्थान में लगभग 6000 बहुमूल्य पाण्डुलिपियां हैं, जिनमें से अधिकतर अप्रकाशित हैं। इन्हीं के संरक्षण के लिए तथा लाडनूं क्षेत्र के आसपास जहां-जहां भी पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं यथा मंदिरों, सामुदायिक वाचनालयों, व्यक्तिगत पुस्तकालयों एवं घरों में संपर्क करके एवं वहां पहुंचकर उन पाण्डुलिपियों को आवश्यकतानुसार सुरक्षित करना अथवा उन्हें संरक्षण केन्द्र लाकर उचित ट्रीटमेंट देकर ठीक करना एवं पुनः उन्हें वापिस लौटाना आदि कार्य लाडनूं के इस केन्द्र द्वारा किया जायेगा। केन्द्र में नियमानुसार कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की जा चुकी है। पाण्डुलिपियों के संरक्षण में मुख्य रूप से प्रत्येक पाण्डुलिपि के पत्रों में यदि नमी है तो उसे प्राकृतिक तरीके से अथवा आवश्यक केमीकल के द्वारा दूर किया जाता है। यदि पत्र फट गये हैं अथवा कीड़े लग गये हैं तो उनमें आवश्यकतानुसार हस्त निर्मित कागज को जोड़कर सम आकार का किया जाता है। प्रत्येक पाण्डुलिपि का विस्तृत रिकार्ड रखा जाता है। अंत में विशेष गत्ते को लगाकर उसे लाल रंग के सूती कपड़े में बांधा जाता है जिससे पुनः उसमें नमी एवं कीड़े आदि न लगे। ये सभी कार्य संस्थान के पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र में केन्द्र के समन्वयक एवं जैनविद्या विभाग के सहायक आचार्य डॉ. योगेश कुमार जैन के निर्देशन में किये जा रहे हैं।

महावीर जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

महाविनाश से बचने के लिये महावीर के सिद्धान्तों को अपनाना होगा- प्रो. दूगड़

संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में महावीर जयंती के अवसर पर 16 अप्रेल को विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने महावीर और महाविनाश को विश्व के सामने दो विकल्प बताये और कहा कि अगर महाविनाश से बचना है तो महावीर के सिद्धांतों को अपनाना होगा। उन्होंने विश्व में मानव जीवन पर संकट के रूप में परमाणु शस्त्र, पर्यावरण संकट एवं वैचारिक आग्रह को सबसे बड़े कारण के रूप में माना और कहा कि इन चुनौतियों और संकटों से बचने के लिये महावीर के तीन सूत्रों को अपनाना होगा। संयम, अपरिग्रह और अनेकांत को स्वीकार करने पर समस्याओं से छुटकारा मिलना संभव है। संयम का पालन करने पर तीनों से संकटों से मुक्ति मिल सकती है। महाविनाश से बचने का तरीका संयम ही है। इससे पर्यावरण को संकट से बचाया जा सकता है। उपभोग का संयम प्रकृति की रक्षा करता है। उन्होंने अपरिग्रह को महावीर का सबसे बड़ा सिद्धांत बताया तथा कहा कि परिग्रह को जितना हो सके सीमित करना चाहिये। उन्होंने आत्मनिर्भरता के बजाये परस्पर-निर्भरता को अपनाने से झगड़े समाप्त होना संभव बताते हुये कहा कि आत्मनिर्भरता से अहंभाव बढ़ता है। प्रो. दूगड़ ने अनेकांत को वैचारिक अनाग्रह बताते हुये कहा कि हमें वैचारिक संकीर्णता से निकलना होगा। कोई व्यक्ति क्या कहता है, से अधिक कैसे कहता है और उससे भी अधिक किस भाव से कहता है, महत्त्वपूर्ण होता है, क्या कहता है गौण है। सबसे ज्यादा ध्यान भाव पर देना चाहिये। उन्होंने कहा कि महावीर जयंती को मनायें, लेकिन उनके सिद्धांतों को भी अपनायें, तभी जन्म जयंती का आयोजन सफल होगा और सृष्टि को बचाने के उत्तरदायित्व को भी सभी निभा पायेंगे।

अहिंसा को पुस्तकों तक सीमित नहीं रखें

पश्चिम बंगाल के शांति निकेतन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जगतराम भट्टाचार्य ने कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुये कहा कि महावीर की वार्तायें, उनकी शिक्षायें सभी त्रैकालिक हैं। ये सभी काल के लिये समान रूप से आवश्यक हैं। महावीर के दर्शन में अहिंसा के तत्त्व को सबसे बड़ा तत्त्व बताते हुये उन्होंने कहा कि अहिंसा को पुस्तकों तक सीमित नहीं रखना चाहिये, क्योंकि महावीर ने अहिंसा का प्रतिपादन पराकाष्ठा तक किया था। महावीर के शास्त्र के कुछ ही तत्त्वों को जीवन में अपने आचरण में उतार लेने से जीवन सफल हो सकता है।

अनेकांत से आता है जीवन में बदलाव

दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने महावीर के दर्शन से अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत के तीन सूत्रों को आचरण में उतारने की जरूरत बताई और कहा कि महावीर के दर्शन के अलावा अनेकांत का विचार अन्य कहीं नहीं मिलता। जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने महावीर के जीवन की दो बातों को महत्त्वपूर्ण बताते हुये कहा कि अप्रमत्तता व सहिष्णुता उनके जीवन की विशेषता थी। वे सतत आत्मा की स्मृति में रहते थे। उन्होंने महावीर के समता धर्म को सबसे बड़ा धर्म बताया तथा कहा कि किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं होना चाहिये। सभी स्थितियों में समभाव रखना चाहिये। यही शांति का सबसे बड़ा सूत्र है। कार्यक्रम में प्रशांत जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का प्रारम्भ मुमुक्षु बहिनों के मंगलाचरण द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक, विद्यार्थी एवं कार्मिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा. योगेश कुमार जैन ने किया।

दस दिवसीय संस्कृत सम्भाषण कार्यशाला आयोजित

भाषा की उत्पत्ति का कारक है गति - प्रो. दूगड़

संस्कृत भारती, जोधपुर के सहमंत्री लीलाधर शर्मा ने संस्कृत सम्भाषण कार्यशाला के समापन के अवसर पर कहा है कि संस्कृत विश्व की समस्त भाषाओं की जननी है तथा सभी क्षेत्रों की भाषाओं में शब्दों का जनन संस्कृत से ही हुआ है। संस्कृत पठनयोग्य एवं पुरातन भाषा होते हुए भी चिरयौवना भी है। उन्होंने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के प्राकृत व संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में 16 से 25 जनवरी तक आयोजित दस दिवसीय संस्कृत सम्भाषण कार्यशाला के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुये विभिन्न अंग्रेजी शब्दों की उत्पत्ति के बारे में जानकारी दी और बताया कि वे संस्कृत से ही निकले हैं। राजस्थानी भाषा के बकरी, सांगोपांग, उंदरा, राती आदि शब्दों का उदाहरण एवं उनके मूल संस्कृत शब्दों के बारे में बताते हुये शर्मा ने कहा कि राजस्थानी भाषा तो वैदिक संस्कृत के नजदीक है। इसी प्रकार उन्होंने थाई भाषा का जिक्र करते हुये बताया कि थाई भाषा के प्रायः शब्द संस्कृत के हैं। शर्मा ने पाणिनी के व्याकरण का उदाहरण प्रस्तुत करते हुये बताया कि संस्कृत केवल सर्व भाषाओं की जननी ही नहीं, बल्कि इसका व्याकरण भी विश्व व्याकरण है। शर्मा ने संस्कृत भाषा को विज्ञान के लिये भी सबसे उपयुक्त बताते हुये कहा कि महर्षि अगस्त्य ने बैटरी बनाने का ज्ञान सबसे पहले लिखा था। इसी प्रकार भागवत पुराण में हृदयरोग की शल्य चिकित्सा का वर्णन उपलब्ध है।

करोड़ों शब्दों से समृद्ध है संस्कृत

समारोह की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि भाषा की उत्पत्ति गति से हुई है। गति से ध्वनि पैदा होती है। ध्वनि धीरे-धीरे शब्दों का रूप लेने लगती है और उससे भाषा बनती है। ऋषि-मुनियों ने ध्वनियों को पकड़ा और उनसे शब्द बनाये व भाषा का विकास हुआ। किसी भी भाषा का विकास व्यवहार से होता है। संस्कृत में करोड़ों शब्द हैं। इसमें 1700 धातुयें हैं, 70 प्रत्यय हैं और 80 उपसर्ग हैं। इनसे 27 लाख शब्द बने और सामासिक शब्द जोड़े जावें तो एक करोड़ से उपर

शब्द बनते हैं। यह विश्व की सबसे समृद्ध भाषा है। आज के वैश्वीकरण के युग में हमारी भाषा को विज्ञान के विकास में सहायक बनाना जरूरी है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी (कृत्रिम बुद्धि), रोबोट, कम्प्यूटर, विज्ञान व अंतरिक्ष के लिये उपयोगी भाषा केवल संस्कृत है। प्रो. दुगड़ ने कहा कि भाषा के रूप में ही संस्कृति व सभ्यता विकसित होती है। संस्कृत भारत के विकास में सहायक है।

सभी 100 सम्भागियों को प्रमाण पत्रों का वितरण

फ्रांस से आई शोध छात्रा निओमि वोरा ने इस अवसर पर संस्कृत में अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुये अपने कार्यशाला के अनुभव प्रस्तुत किये और संस्कृत गीतिका का गान किया। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रो. दामोदर शास्त्री ने भाषा की शुद्धता बनाये रखने पर जोर दिया तथा कहा, कि संस्कृत सम्भाषण में कौशल की वृद्धि होने में यह कार्यशाला सहायक सिद्ध होगी। कार्यक्रम में मुमुक्षु सारिका, प्रशांत जैन व पूजा ने अपने कार्यशाला के अनुभव सुनाये। छात्र नीलू ने संस्कृत गीत पर नृत्य की प्रस्तुति दी। प्राकृत एवं संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डा. समणी संगीत प्रज्ञा ने प्रारम्भ में स्वागत भाषण एवं कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। विपुल जैन के संस्कृत मंगलाचरण से कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया। समारोह में सभी 100 सम्भागियों को प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया। अंत में डा. सत्यनारायण भारद्वाज ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन समणी धृतिप्रज्ञा ने किया।

संस्कृत हमारे रक्त में समाई है, इसे बाहर निकालें

संस्कृत भारती जोधपुर के प्रशिक्षक श्रवणकुमार ने इससे पूर्व कार्यशाला के शुभारंभ पर कहा कि संस्कृत हमारे रक्त में है, उसे बाहर निकालने की जरूरत है। संस्कृत मधुर एवं सरस भाषा है, उसकी सरसता को पहचानने की जरूरत है। कार्यक्रम के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि सीखने के लिए दीर्घकाल तक निरंतर एवं समर्पण के साथ अभ्यास करना चाहिए।

प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि संस्कृत भाषा से ही भारत देश का गौरव है। समणी नियोजिका मल्लीप्रज्ञा ने कहा कि संस्कृत भाषा के विद्वान को ही पण्डित का पद मिलता है। प्राकृत व संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने स्वागत-भाषण में संस्कृत भाषा का महत्त्व बताया तथा कहा कि यह कार्यशाला संस्कृत भाषा को जीवंत करेगी। अंत में डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा ने किया।

ज्ञान व आचार की समन्विति से आता है जीवन में निखार- प्रो. शास्त्री

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग में स्नातकोत्तर के विदाई समारोह में 9 अप्रेल को प्रो. दामोदर शास्त्री ने विद्यार्थियों को भावी जीवन की बधाई देते हुये कहा कि ज्ञान का सार आचार होता है, इसलिये अपने आचरण को हमेशा उज्ज्वल रखना चाहिये। आचरण की उज्ज्वलता ही जीवन में आगे बढ़ाने में सहायक होती है। ज्ञान और आचार की समन्विति जीवन में निखार लाती है। विभागाध्यक्ष डा. समणी संगीतप्रज्ञा ने कहा कि विदाई से इस बात की प्रेरणा मिलती है कि जो कुछ हमने सीखा है, उसका व्यापक प्रसार करें। उन्होंने कहा कि प्राच्य विद्याओं में रुचि होना अपनी जड़ों की तरफ लौटना है। इसके लिये हमें अन्यों को भी प्रेरित करना चाहिये। उन्होंने विद्यार्थियों के आध्यात्मिक जीवन के लिये मंगलकामनायें की। डा. सत्यनारायण भारद्वाज ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में समणी भास्कर प्रज्ञा एवं समणी सम्यक्त्व प्रज्ञा ने कविताओं के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये। समणी धृतिप्रज्ञा, मुमुक्षु खुशबू, मुमुक्षु दर्शिका, मुमुक्षु पूजा, मुमुक्षु करिश्मा, मुमुक्षु वंदना व मुमुक्षु खुशबू ने अपने अध्ययनकाल के दो वर्षों के अनुभव साझा किये। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के अलावा शोधार्थी मीनाक्षी व डा. वन्दना मेहता भी उपस्थित रही। कार्यक्रम का संचालन मुमुक्षु सुरभि, मुमुक्षु प्रज्ञा एवं मुमुक्षु प्रेक्षा ने किया।

रिसर्च ओरियेंटेशन वर्कशॉप आयोजित

समस्याओं के समाधान को प्रशस्त करता है शोध का व्यावहारिक पक्ष- प्रो. भट्टाचार्य

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के अन्तर्गत शोध-छात्रों के लिये 12 अप्रेल को आयोजित की गई रिसर्च ओरियेंटेशन वर्कशोप में बंगाल के शांति निकेतन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जगतराम भट्टाचार्य ने शोध-प्रक्रिया एवं शोध के अंग-प्रत्यंगों सहित विविध पहलुओं पर चर्चा करते हुये रोचक ढ़ंग से शोध करने के लिये उसके व्यावहारिक पक्ष को बताया तथा कहा कि ज्ञान में व्यवहार वह होता है, जो समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करता है। उन्होंने कहा कि शोध में किसी भी घटना-परिघटना के कार्य-कारण सम्बंध को निर्धारित करके उसके समाधान को भी साथ में ढूंढना आवश्यक होता है। इसमें जीवन के विविध विषयों और समस्याओं का सही ज्ञान होने के साथ उनके नियोजन और सुधारात्मक उपचार को प्रस्तुत करना चाहिये।

उन्होंने साहित्य के क्षेत्र से सम्बंधित और प्रासंगिक जानकारी भी छात्रों को प्रदान करके उन्हें लाभन्वित किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर भी उन्होंने दिये और जिज्ञासा शांत करते हुये समाधान प्रदान किया। विभागाध्यक्ष डा. समणी संगीतप्रज्ञा ने प्रारम्भ में प्रो. भट्टाचार्य का परिचय प्रस्तुत करते हुये स्वागत किया। यहां फ्रांस से शोध करने यहां आई ओयेमी डेलिग्रांस भी उपस्थित थी, वे यहां आयुर्वेद के ग्रंथों पर शोध कर रही है। इस अवसर पर करीब 20 शोधार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में प्रो. सत्यनारायण भारद्वाज ने आभार ज्ञापित किया।

जैन स्कॉलर योजना में 11 दिवसीय कार्यशाला

फिर से पुनर्जीवित होने जा रही है प्राकृत भाषा- डा. संगीतप्रज्ञा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में संचालित "जैन स्कॉलर" योजना के तहत 26 मार्च से 5 अप्रेल को आयोजित 11 दिवसीय कार्यशाला में जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डा. समणी संगीत प्रज्ञा ने बताया कि प्राकृत भाषा का निरन्तर ह्रास होता जा रहा था, लेकिन अब यह पुनर्जीवित होने जा रही है। जैन आगमों के साथ अन्य ग्रंथ व साहित्य भी प्राकृत में निहित है और भाषा के लुप्त होने से यह सारा साहित्य व दर्शन संकट में था। ऐसे में तेरापंथ की बहिनों ने प्राकृत भाषा के अध्ययन का बीड़ा उठाया है, जो बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहा है। उन्होंने कहा कि कभी इस देश में प्राकृत भाषा जनभाषा के रूप में रही थी और अब वापस उसे जनभाषा बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने प्राकृत व संस्कृत को परस्पर जुड़ी हुई भाषायें बताते हुये कहा कि दोनों ही भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है।

संस्कृत देवभाषा है – डा. समणी भास्कर प्रज्ञा ने संस्कृत की महत्ता बताते हुये कहा कि इसे देवभाषा का दर्जा प्राप्त है। संस्कृत समृद्ध और विशुद्ध वैज्ञानिक भाषा है। संस्कृत साहित्य में ज्ञान का अथाह भंडार समाहित है। प्रखर

विद्वान प्रो. दामोदर शास्त्री ने कार्यशाला की सम्भागियों को संस्कृत ज्ञान के अनुभव व अध्ययन की सरलता व लयबद्धता से अवगत करवाया। विश्वविद्यालय के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के शिक्षकों द्वारा कार्यशाला के सम्भागियों को प्राकृत, संस्कृत, कर्मग्रंथ, भारतीय दर्शन और जैन भूगोल विषयों का अध्यापन करवाया गया।

जैन स्कॉलर योजना पिछले 8 वर्षों से निरन्तर चल रही है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ज्ञान योजना के अन्तर्गत संचालित त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम में कुल 55 महिला-पुरूष अध्ययनरत हैं। इस 11 दिवसीय कार्यशाला में कुल 45 सम्भागियों ने भाग लिया।

पर्यावरण सुरक्षा पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

अर्थशास्त्र को सर्वहितकारी बनायें- प्रो. गोयल

संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में "पर्यावरण सुरक्षा एवं समाज कार्य अभ्यास" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारम्भ 9 मार्च को यहां सेमिनार हॉल में किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि जगन्नाथ विश्वविद्यालय, जयपुर के कुलपति प्रो. मदन मोहन गोयल ने कहा कि अर्थशास्त्र को स्वार्थ की भूमिका से निकाल कर सर्वहितकारी बनाने की आवश्यकता है। जब "मैं" से निकाल कर "आप" की अवधारणा अर्थशास्त्र में आयेगी तो अनेक समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा। यह सब नैतिक अर्थशास्त्र को बढावा देने से होगा। स्वार्थ और लालच के कारण भी पर्यावरण को खतरा एवं अन्य समस्यायें पैदा होती है। इन पर संयम कायम करने पर इन सबसे से छुटकारा पाया जा सकता है। उन्होंने राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक की भूमिका को पर्यावरण से जोड़ दिया जावे तो बहुत काम हो सकता है। मुख्य वक्ता टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशियल साईंस, मुम्बई के निदेशक प्रो. आर.आर. सिंह ने पर्यावरण को आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों से जोड़ते हुये संस्थान के तीन आयामों दवा, दुआ और हवा की शुद्धि की आवश्यकता बताई।

परस्परता से संभव है पर्यावरण संरक्षण

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये अपने सम्बोधन में कहा कि परस्पर

निर्भरता से समस्याओं से निपटा जा सकता है। पर्यावरण की रक्षा के लिये परस्परता आवश्यक तत्व है। उन्होंने संतोष और इच्छा-विहीनता के साथ वस्तुओं की मितव्ययिता व उन्हें व्यर्थ बर्बाद नहीं करने की प्रवृत्ति के विकास की आवश्यकता भी बताई। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि दिल्ली स्कूल आफ सोशियल वर्क के सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो. ए.एन. सिंह ने पर्यावरण के विभिन्न आयामों, सरकारी नीतियों और वैधानिक प्रावधानों के बारे में विस्तार से बताया। प्रारम्भ में संगोष्ठी के निदेशक डा. बिजेन्द्र प्रधान ने संगोष्ठी की पृष्ठभूमि और उद्देश्य पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का शुभारम्भ छात्राओं के मंगलगान से किया गया। अंत में अंकित शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. पुष्पा मिश्रा ने किया।

भ्रूण हत्या के प्रति समाज में घृणा व उपेक्षा का माहौल बनना जरूरी- स्वामी राघवाचार्य

गोष्ठी के समापन सत्र के मुख्य अतिथि रैवासा धाम के पीठाधीश्वर स्वामी राघवाचार्य महाराज ने कहा है कि पर्यावरण के संकट की विभीषिका से मुक्ति के लिये समाज को जागरूक होना पड़ेगा। मनुष्य के मन और बुद्धि में व्याप्त प्रदूषण के कारण पर्यावरण पर संकट पैदा होता है। हम जितने जागरूक होंगे, उतनी ही प्रकृति, पर्यावरण और मानव मात्र की सेवा कर पायेंगे। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या को महापाप बताते हुये कहा कि महाभारत में भी आया है कि भ्रूणहत्या करने वाले का सूतक कभी खत्म नहीं होता। इस पाप का कोई प्रायश्चित्त भी नहीं होता है। उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों के प्रति समाज में घृणा और उपेक्षा का माहौल बनना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि सारी समस्यायें पर्यावरण के प्रकोप की है और प्रत्येक व्यक्ति अपने दायित्व को निर्वहन करें और प्रकृति के नजदीक रहें तो स्थिति सुधर सकती है। समापन सत्र के विशिष्ट अतिथि श्रम निदेशालय के सचिव व श्रम आयुक्त डा. नवीन जैन आईएएस ने कहा कि समाज से लिंगभेद का मिटना आवश्यक है। बेटी-बचाओ, बेटी-पढाओ का समर्थन करते हुये उन्होंने कहा कि पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं में सामाजिक पर्यावरण की तरफ भी ध्यान देना आवश्यक है।

प्लेसमेंट शिविर का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 23 फरवरी को प्लेसमेंट का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सुजानगढ़ व लाडनूं की विभिन्न स्कूलों के प्राचार्य व निदेशकों ने उपस्थित रह कर बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर की छात्राध्यापिकाओं, जो विभिन्न विषयों जैसे हिन्दी, सामाजिक अध्ययन, नागरिक शास्त्र, इतिहास, गणित, भौतिक विज्ञान, जीवन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, अंग्रेजी विषयों की हैं, ने भाग लिया। प्लेसमेंट कार्यक्रम में अनेक छात्राध्यापिकाओं को नियुक्ति देने की सहमति शालाओं के संचालकों ने प्रकट की। अपनी नियुक्ति के भरोसे को लेकर छात्राध्यापिकाओं में उत्साह व खुशी रही। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया, छात्राध्यापिकाएं पाठ्यक्रम के साथ-साथ पाठ्यसामग्री क्रियाओं में भी भाग लेती हैं। नवाचार, तकनीकी, मूल्य मनोविज्ञान संकाय विषय के क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। संस्थान का यह विभाग शिक्षण-प्रशिक्षण के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। उन्होंने बताया कि यहां से उत्तीर्ण छात्राएं विभिन्न सरकारी-गैर-सरकारी संस्थाओं में नियुक्त हैं। प्लेसमेन्ट प्रभारी डॉ. सरोज राय व डॉ आभासिंह ने बताया कि संस्थान में सैद्धान्तिक व व्यावहारिक दोनों ही शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है, यही कारण है कि यहां पढ़ते-पढ़ते ही विद्यार्थियों को नौकरी मिल जाने से उन्हें केरियर की चिंता नहीं करनी पड़ती है। इसके लिये यहां विशेष तैयारी भी करवाई जाती है।

तीन दिवसीय अहिंसा, शांति व मानवाधिकार प्रशिक्षण शिविर आयोजित

मानवाधिकारों की रक्षा के लिये शांति व सद्भावना जरूरी- प्रो. यादव

हरियाणा के केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ के प्रोफेसर संजीव कुमार यादव ने कहा शांति के बिना सद्भावना नहीं हो सकती और सद्भावना के बिना मानवाधिकारों की रक्षा नहीं हो सकती है। हमारे समाज और हमारे राष्ट्र को हमसे जो अपेक्षायें हैं, उनके अनुसार हमें एक अच्छा मानव, एक अच्छा शिक्षक और एक अच्छा विद्यार्थी बनने के लिये आवश्यक है कि इसके लिये उचित प्रशिक्षण भी हो। अहिंसा एवं शांति तथा मानवाधिकारों सम्बंधी प्रशिक्षण इसी प्रयास का हिस्सा है। वे यहां जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्त्वावधान में 2 से 4 फरवरी को आयोजित अहिंसा, शांति व मानवाधिकार प्रशिक्षण के तीन दिवसीय युवा शिविर के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

हिंसा के माहौल में अहिंसा का प्रशिक्षण महत्वपूर्ण

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा विश्व भर में चारों तरफ फैले हिंसा के माहौल में अहिंसा की बात करना और अहिंसा का प्रशिक्षण देना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय के द्वितीय अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा प्रशिक्षण की तकनीक दी। उनका मानना था कि जब हिंसा का प्रशिक्षण हो रहा है तो अहिंसा का प्रशिक्षण भी होना चाहिये।

वैश्विक परिवार की जगह वैश्विक बाजार बन गया है

शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने कहा कि हमारी प्राचीन विचारधारा व संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम की रही है। हम विश्व को एक सार्वभौम-परिवार के रूप में मानते रहे हैं, जबकि अब इसे सार्वभौम-बाजार माना जाने लगा है। हमें हमेशा भारतीय परम्पराओं को साथ लेकर चलना है। अहिंसा व शांति सहित समस्त जीवन मूल्यों को समझने की जरूरत है। कार्यक्रम में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जुगलकिशोर दाधीच ने प्रारम्भ में तीन दिवसीय शिविर की रूपरेखा

प्रस्तुत की और बताया कि यह पहला विश्वविद्यालय है, जिसमें अहिंसा एवं शांति के लिये अलग से विभाग है और विद्यार्थियों को अहिंसा की शिक्षा प्रदान की जाती है। उन्होंने हर साल युवा वर्ग के लिये लगाये जाने वाले अहिंसा प्रशिक्षण शिविरों की जानकारी दी और अहिंसा प्रशिक्षण की तकनीक के बारे में बताया। अंत में डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया।

हिंसा के जनक क्रोध पर काबू पाना पहली आवश्यकता-आचार्य पाटोदिया

तीन दिवसीय अहिंसा, शांति एवं मानवाधिकार प्रशिक्षण शिविर का समापन 4 फरवरी को किया गया। शिविर के समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुये सेंटर फॉर पब्लिक अवेयरनेस एंड इंफोरमेशन जयपुर के निदेशक आचार्य प्रो. सत्यनारायण पाटोदिया ने कहा कि क्रोध हिंसा का जनक माना जाता है, इसलिये सबसे पहले अपने क्रोध पर जीत हासिल करनी चाहिये। अगर हम क्रोध पर काबू पा लेते हैं तो समूचे समाज में सुधार लाने में समर्थ हो जाते हैं। उन्होंने अहिंसा एवं शांति विभाग के कार्य और अहिंसा प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की तथा तीन दिवसीय प्रशिक्षण को सभी संभागियों के जीवन का महत्वपूर्ण अंश बताया। समारोह की अध्यक्षता करते हुये शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने कहा कि अहिंसा प्रशिक्षण शिविर में जो कुछ सीखा, उसे जीवन में अपनाया जाना आवश्यक है। समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने शिविर में सीखे गये सैद्धांतिक व व्यावहारिक प्रशिक्षण को जीवन में, कार्यक्षेत्र में, व्यवहार व आचरण में उतारने की आवश्यकता बताई और कहा कि जो कुछ सीखा गया उसे समाज में रिफ्लेक्ट करें, तभी उसकी सार्थकता होगी। शिविरार्थी पीयूष शर्मा डीडवाना, दारासिंह लक्ष्मणगढ़ आदि ने अपने अनुभव बताते हुये कहा कि उन्होंने इस शिविर में गुस्से पर नियंत्रण करना, भावों को संयमित करना, धैर्य रखना और ध्यान का अभ्यास करना सीखा है, जो उनके जीवन में सदैव काम आयेगा। प्रारम्भ में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जुगलकिशोर दाधीच ने तीन दिवसीय शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की और शिविरार्थी युवाओं को दी गई महत्त्वपूर्ण जानकारी के बारे में बताया। अंत में डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पुरस्कारों का वितरण

तीन दिवसीय शिविर के दौरान आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता के प्रतिभागियों में विजेता रहने वाले युवाओं को पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया गया। "आर्थिक आधार पर आरक्षण कितना उचित है" विषय पर आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर नरेन्द्र सिंह राठौड़, डीडवाना रहे। द्वितीय स्थान पर ऋषिकुल कॉलेज के दारा सिंह व तृतीय स्थान पर नृत्य व संगीत के कार्यक्रम में प्रथम धनराज सोनी, नागौर व द्वितीय प्रेमाराम रहे। सामुहिक नृत्य में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्रायें पिंकी, पूजा व सलोनी तथा एकल नृत्य में जगाराम भाकर प्रथम, शिल्पा शर्मा महेन्द्रगढ द्वितीय, टीटी कॉलेज का गणपत और संजय डेगाना तृतीय रहे। इनके अलावा सांत्वना पुरस्कार के रूप में विष्णु कुमार नागौर, मनोज कुमार व पीताम्बर शर्मा को सम्मानित किया गया।

अहिंसा व शांति प्रधान रही है भारतीय संस्कृति- प्रो. धर

एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में यहां एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 18 मार्च को किया गया। शिविर में शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने कहा कि भारतीय संस्कृति अहिंसा एवं शांति की संस्कृति रही है, इसमें नैतिक मूल्यों और मानवाधिकारों पर सर्वाधिक ध्यान दिया गया है। उन्होंने बताया यहां विद्यार्थियों के लिये संस्कार निर्माण के साथ उन्हें अहिंसक व मानसिक रूप से परिपक्व बनाने के लिये आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किया जाने की व्यवस्था की गई है। अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जुगलकिशोर दाधीच ने अहिंसा के महत्व को बताते हुये विश्वशांति में अहिंसा के योगदान को चित्रित किया तथा बताया कि समूचे विश्व में यह एकमात्र विश्वविद्यालय है, जहां अहिंसा का शिक्षण व प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

यौगिक क्रियाओं का करवाया अभ्यास

योग विशेषज्ञ डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने योग के महत्व को समझाते हुये विभिन्न यौगिक क्रियाओं से रोगमुक्ति एवं स्वस्थ जीवन के उपाय बताये तथा शिविरार्थियों को उनका अभ्यास करवाया। अंत में डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया। शिविर में मौलाना आजाद उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं लाडमनोहर बाल निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय के 11वीं व 12वीं कक्षाओं के 130 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

विद्यार्थियों को संस्कारित करने में सहायक है अहिंसा प्रशिक्षण – डॉ. दाधिच

एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के अन्तर्गत एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 6 मार्च को किया गया। इस शिविर में सुजानगढ के मदर्स इन्टरनेशनल स्कूल के लगभग 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में ही अहिंसा का प्रशिक्षण उसे भविष्य का सद्नागरिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होता है। शिविर में अहिंसक प्रवृत्ति के विकास के लिये अनेक प्रायोगिक अभ्यास करवाये जाते हैं, जो उनके जीवन के लिये लाभदायक सिद्ध होते हैं। शिविर में विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने कहा कि विभिन्न विद्यालयों के बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए समय-समय पर जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय ऐसे शिविरों का आयोजन करता है। मदर्स इन्टरनेशनल स्कूल के अध्यापक गजेन्द्र सिंह ने अपने विद्यालय का परिचय देते हुए कहा कि शिविर में भाग लेने पर अपने आपको गौरवान्वित महसूस किया। उन्होंने अहिंसा प्रशिक्षण को हर युवा के लिये आवश्यक बताया। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने शिविर का परिचय दिया तथा संस्थान के अन्तर्गत संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों की जानकारी दी। कार्यक्रम में शिविरार्थियों को अहिंसा प्रशिक्षण के अभ्यास के विभिन्न आवश्यक प्रयोग डॉ. विकास शर्मा ने करवाये।

उन्नत भारत अभियान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग एवं समाज कार्य विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 17 जनवरी को मानव संसाधन विकास मंत्रलय, नई दिल्ली का प्रशिक्षण कार्यक्रम ''उन्नत भारत अभियान'' आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि गांव के विकास के बिना देश का विकास अधूरा है। हमें पूरे राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिये सर्वप्रथम गांवों की ओर ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि गांव के विकास के लिए सकारात्मक सोच, तत्परता, कार्य कुशल निष्ठा जरूरी है। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने इस अवसर पर कहा कि आदर्श एवं मूल्यपरक व्यक्ति के द्वारा समाज विकास संभव है। कार्यक्रम में समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने उन्नत भारत अभियान के सन्दर्भ में प्रकाश डाला। उन्नत भारत अभियान के नोडल अधिकारी डॉ. भावाग्राही प्रधान ने अभियान के बारे में विस्तार से जानकारी दी एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

उन्नत भारत अभियान के तहत ग्रामीण क्षेत्रों का सर्वे

मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय के अधीन ''उन्नत भारत अभियान'' के तहत जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के तत्त्वावधान में 8 मार्च तक तहसील के विभिन्न गांवों में पहुंच कर ग्रामीण सर्वेक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस सर्वेक्षण में शिक्षा विभाग के सहायक आचार्य प्रो. डा. भावाग्रही प्रधान व डा. आभासिंह के निर्देशन में बी.एड. में अध्ययनरत छात्राध्यापिकाओं ने तहसील के ग्राम दुजार, बालसमंद, गुणपालिया, बाकलिया व जोरावरपुरा में ग्रामवासियों से गांवों में संचालित विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं उनके प्रभाव व लाभ, ग्रामीण विकास की स्थिति, क्षेत्र में रह रहे परिवारों की प्राथमिक जरूरतों, उनकी रोजगार, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि की स्थिति के बारे में पूरी जानकारी एकत्र की।

प्रसार-भाषण माला कार्यक्रम

“अध्यापन शिक्षा में गुणात्मक सुधार”

संस्थान के शिक्षा विभाग में प्रसार भाषण माला के अन्तर्गत 11 मार्च को व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान के विषय ''अध्यापन-शिक्षा में गुणात्मक सुधार'' पर बोलते हुये व्याख्यानकर्ता प्रो. ओ.पी. शर्मा ने कहा कि राजकीय व्यवस्था में शिक्षा की दृष्टि से शिक्षा विभाग राज्य में एक अनूठा संस्थान है, इसमें प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली छात्राध्यापिकाएं बधाई की पात्र हैं। उन्होंने इस अवसर पर आईटीईपी (ITEP) के नये कोर्स, जो एनसीटीई (NCTE) द्वारा 2020 से संचालित होने वाला है, उसके विविध पक्षों के बारे में गहन जानकारी प्रदान की तथा जागरूक किया। उन्होंने कहा कि छात्राध्यापिकाओं को हर परिस्थिति में अच्छी बातें सीखने का प्रयास करना चाहिए। बी.एड, बी.एससी-बी.एड, बी.ए.-बी.एड. के छात्राध्यापिकाओं के व्यवहार में प्रशिक्षण की झलक दिखनी चाहिए, क्योंकि वे आने वाले समय में शिक्षक समुदाय का अभिन्न हिस्सा होंगे। छात्राध्यापिकाओं को मन पर नियन्त्रण करते हुए एकाग्रता के साथ अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करके सफलता प्राप्त करनी होगी।

नृत्य एवं गीतों के साथ होली पर फुहार कार्यक्रम

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत होली पर्व के अवसर पर कार्यक्रम फुहार का आयोजन 17 मार्च को स्नेह मिलन के रूप में किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि होली हमारे जीवन में उमंग, उत्साह एवं नवीन ऊर्जा का संचार करने वाला पर्व है। होली का त्यौहार हमारे जीवन में रंगों की विविधता एवं सम्मिश्रण व परस्पर समायोजन की प्रेरणा देता है। संयोजक डा. गिरधारीलाल शर्मा ने कहा कि हमें त्यौहार को सुरक्षित व गरिमामय ढंग से मनाना चाहिये। कार्यक्रम में बीएड तथा बीए-बीएड व बीएससी-बीएड में अध्ययनरत छात्राध्यापिकाओं के गठित विभिन्न सदनों ने सामूहिक गायन व सामूहिक नृत्य की प्रस्तुतियां दी। इनमें गांधी सदन ने " होलिया में उड़े रे गुलाल...." की प्रस्तुति दी। आचार्य महाप्रज्ञ सदन ने " रंग बरसे भीगे चुनर वाली....", आचार्य महाश्रमण सदन ने "पीली लुगड़ी रा झाला....", जे. कृष्णमूर्ति सदन ने पंजाबी गीत "रंग दा कमाल...." शारदा सदन ने " काल्यो कूद पड़्यो मेला में...." आदि गीतों के साथ रंगारंग नृत्यों की प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम में संकाय सदस्य डा. गिरीराज भोजक ने राजस्थानी चंग गीत एवं डा. गिरधारी लाल शर्मा ने रंग बरसे गीत की प्रस्तुति दी।

विवेकानंद जयंती मनाई

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में 12 फरवरी को स्वामी विवेकानन्द जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने कहा कि विवेकानन्द में विवेक व आनन्द का समावेश है। विवेक, बुद्धि हमारी जितनी अच्छी होगी, हमारा चिन्तन उतना ही सुदृढ़ होगा। युवा पीढ़ी को अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर अग्रसर होना चाहिए। छात्राध्यापिकाओं में बादु विश्नोई, प्रिया माली, ज्योत्सना बिश्नोई, प्रियंका चौधरी, पूजा कुमारी आदि ने विवेकानन्द के विविध प्रसंगों और कविता पाठ के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अमिता जैन ने किया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. सरोज राय, डॉ गिरधारीलाल शर्मा, डॉ आभा सिंह, सुश्री मुकुल सारस्वत, देवीलाल आदि उपस्थित रहे।

छात्राध्यापिकाओं का शुभ-भावना समारोह आयोजित

विषम परिस्थितियों में मुकाबले के लिये तराशे जाते हैं विद्यार्थी - मेहता

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में 16 अप्रेल को शुभ-भावना समारोह का आयोजन किया जाकर एमएड, बीएड की अंतिम वर्ष की छात्राओं को भावभीनी व आकर्षक ढंग से विदाई दी गई। यहां महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता करते हुये कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने कहा कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों को जीवन की विषम स्थितियों से मुकाबले के लिये तराश कर उनके जीवन को बेहतरीन बनाते हैं। यहां छात्राओं में अनुशासन, सहनशीलता, रुचि का विस्तार एवं विभिन्न कलाओं में निपुण बनाने आदि गुणों का विकास करके उन्हें समाज व राष्ट्र के लिये बहुमूल्य बनाया जाता है।

मुख्य अतिथि जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि जीवन में भावनाओं का महत्व होता है। जैसी हमारी भावना होती है, हमारे जीवन का विकास भी वैसा ही होता है। विद्यार्थी बीज की तरह होते हैं, जिनमें विकास की असीम संभावनायें होती हैं। उन्होंने कहा कि विदाई का अर्थ फल के पकने की तरह से होना चाहिये। विद्यार्थी शिक्षित होकर परिपक्व होकर जाता है तो उसमें पके फल की तरह से वाणी व व्यवहार की मिठास, विनम्रता और गुणों के रंग व सुगंध होनी चाहिये। विद्यार्थी में आने वाले परिवर्तन में उसके स्वभाव में अनुशासन, शांति, शालीनता आनी चाहिये, तभी वह जीवन में आगे बढ सकता है और अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है।

शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि गुरु का यह प्रयास रहता है कि छात्राओं में ऐसी कोई गलती नहीं रहने पाये, जिससे उन्हें जीवन में कोई परेशानी उठानी पड़े। जीवन में हमेशा मेहनत व निष्ठा जरूरी होती है और यही छात्राओं के आगे बढने में सहायक होती हैं। कार्यक्रम में प्रियंका राठौड़, हेमा, मोनिका सैनी, पूजा कुमारी, प्रियंका बिड़ियासर एवं समूह, कविता शर्मा, कविता जोशी, मोना राठौड़, रितिका दाधीच आदि ने विभिन्न राजस्थानी, हिन्दी व पंजाबी गीतों पर नृत्यों की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। प्रियंका टाक, आयुषी सैनी, हेमा आदि ने अपने विश्वविद्यालय के छात्र-जीवन के अनुभव प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के अंत में डा. सरोज राय ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन ज्योति व सुमन सोमड़वाल ने किया।

अखिल भारतीय अन्तर्महाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता

सरकारों की मजबूती का आधार बिन्दु होता है समाज - प्रो. दूगड़

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित विवेकानन्द क्लब के तत्त्वावधान में दिल्ली निवासी एवं अमेरिका प्रवासी सुरेन्द्र कुमार जैन के आर्थिक सौजन्य से अखिल भारतीय अन्तर्महाविद्यालय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 12 जनवरी को किया गया। प्रतियोगिता का विषय "सदन की राय में चुनावी राजनीति में राजनैतिक दलों के बागी प्रत्याशियों की चुनौती स्वस्थ लोकतंत्र के लिए घातक है" रखा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ द्वारा की गई, जिन्होंने भारतीय राजनीति की मौलिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सरकारों की मजबूती का आधार बिन्दु समाज होता है, साथ ही बतलाया कि सफलता एवं असफलता से ही दुनिया में पहचान होती है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. एस.बी.एल. त्रिपाठी (प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, डेगाना) ने विज्ञान, अध्यात्म, संस्कृति एवं धर्म ग्रन्थों के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया तथा जैन विश्वभारती संस्थान की गौरवमयी संस्कृति एवं क्षमता की प्रशंसा की।

भीलवाड़ा की नेहा प्रथम व लाडनूं की मेहनाज द्वितीय रही

इस प्रतियोगिता में दो दर्जन से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लेकर विषय पर पक्ष-विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर एस.एस.एम. राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा की छात्रा नेहा शर्मा, द्वितीय स्थान पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, लाडनूं की छात्र मेहनाज बानो तथा तृतीय स्थान श्रीमती मोहरी देवी तापड़िया बालिका महाविद्यालय, जसवंतगढ़ की छात्रा पूजा फूलवारिया रही। जिन्हें क्रमशः 7100/-, 6100/- तथा 5100/- नगद, प्रतीक चिह्न एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। दो सांत्वना पुरस्कार- राजकीय महाविद्यालय, अजमेर के छात्र सांवरमल चौधरी तथा एम. बी.एम. इंजिनियरिंग कॉलेज, जोधपुर के छात्र राघव शर्मा ने प्राप्त किया। जिन्हें क्रमशः एक-एक हजार रुपये नगद, प्रतीक चिह्न एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत व्यक्तव्य के साथ कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका में बी.जी. शर्मा, रामकुमार तिवाड़ी एवं कार्तीप्रसाद शर्मा रहे। डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह चारण ने किया।

शहीद दिवस पर किया महात्मा गांधी को याद

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में महात्मा गांधी के बलिदान दिवस को 30 जनवरी को शहीद दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने महात्मा गांधी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन, असहयोग आंदोलन आदि के बारे में भी बताया तथा कहा कि उनके आंदोलनों और जनता से उनके जुड़ाव के कारण ही अंग्रेज देश को छोड़ कर जाने को मजबूर हुये थे। प्रो. त्रिपाठी ने अनेक उदाहरण देते हुये कहा कि महात्मा गांधी के सम्पूर्ण जीवन पर दृष्टि डालें तो हमें प्रत्येक व्यक्ति को सफलता दिलाने वाले अनेक गुण व सूत्र नजर आयेंगे। अगर गांधी के इन विचारों को अपने जीवन में उतार लिया जाए तो हम जीवन की अनेक समस्याओं से मुक्ति पा सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन डा. प्रगति भटनागर ने किया। कार्यक्रम में अभिषेक चारण, अपूर्वा घोड़ावत, सोनिका जैन, योगेश टाक, सोमवीर सांगवान, बलवीर सिंह, रत्ना चौधरी आदि एवं समस्त छात्रायें उपस्थित थी।

कॅरियर फेयर एवं यूथ फेस्टिवल का आयोजन

आचार्य कालु कन्या महाविद्यालय एवं कॅरियर काउंसलिंग सेल के तत्त्वावधान में 18 मार्च को कॅरियर फेयर एवं यूथ फेस्टिवल का आयोजन किया गया। संस्थान के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर हुये इस कार्यक्रम में कुल 16 स्टालें विभिन्न आईटमों और वैरायटी की लगाकर प्रदर्शित की गई; इन स्टालों के नाम क्रमशः राजस्थानी ग्रुप, हंकी फूड फंकी गेम, दिल्ली, पीएचडी की ए-वन पावभाजी, मुम्बई, समरीन ग्रुप, महाराष्ट्रीयन ग्रुप, पंजाबी तड़का व सुजानगढ पान पैलेस रखे गये। इनमें चना चाट व गेम, आलू टिक्की व गेम, पावभाजी व गेम, चाउमीन व गेम, स्वीट कॉर्न एवं कॉफी, कास्टर्ड गेम, चाइनीज भेल, खाटा चूरी, एसीसरीज गेम, बिस्किट फ्रेंटासी, दाबेली, पिजा फ्रेंटासी, मंचूरियन, समोसा चाट, कचोरी, पेटीज, दूध-जलेबी, दही-पूरी, जैम स्टोक, भेलपुरी, सेवपुरी, पान, पपड़ी चाट आदि आईटमों की वैराइटीज सजाई गई। इनमें रश्मि, मानसी, हेमलता, पूजा, ज्योति, समरीन, यासमीन बानो, युक्ता, प्रतिष्ठा, लक्ष्मी, प्रगति, सरिता, महिमा, सृष्टि, मुस्कान, करीना, अंजुम, कोमल, संध्या, सलमा, कीमती, रेणु, तृप्ति, सुस्मिता, अमिता, दीपिका, अंकिता, मोनिका, गायत्री, सीमा, अमरीन, रजिया, साहिबा, नीकिता, निलोफर, सोनिया, नन्दिनी, डिम्पल, रचना, कीर्ति, रेखा, चंचल, जाह्नवी, दक्षिता, खुशनुमा, रेशमा, प्रियंका, किरण, मेघा, निष्ठा, दिशा, दृष्टि, चेतन, विनीता, रंजना, पवन, अंतिमा, पूजा, योगिता, अक्षिता आदि ने हिस्सा लिया।

आयोजन की व्यवस्थाओं में डा. जुगलकिशोर दाधीच, डा. बलवीर सिंह, सोमवीर सांगवान, सोनिका जैन, अपूर्वा घोड़ावत, डा. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, योगेश टाक, अभिषेक चारण व घासीलाल शर्मा का योगदान रहा।

शैक्षणिक भ्रमण दल ने माउंट आबू व सिरोही में विभिन्न मंदिर व दर्शनीय स्थलों का किया अवलोकन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं के एक दल ने दो दिवसीय शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण (22-23 मार्च) से लौट कर 24 मार्च को यहां सबके साथ अपने अनुभव साझा किये तथा कहा कि इस भ्रमण से उन्हें बहुत सारी नई जानकारियां मिलीं एवं उन्हें राजस्थान की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत से रूबरू होने का अवसर मिला। 47 छात्राओं का यह भ्रमण दल यहां से माउंट आबू गया, जहां उन्होंने गुरु शिखर, नक्की झील, सनसेट पाइंट, अर्बुदा देवी मंदिर, देलवाड़ा जैन मंदिर, देरानी-जेठानी का झरोखा आदि का अवलोकन किया और उन सबके बारे में ऐतिहासिक व सांस्कृतिक जानकारी प्राप्त की। माउंट आबू से यह दल रवाना होकर अगले दिन सिरोही गया, जहां पावापुरी जैन तीर्थस्थल का भ्रमण किया और वहां से दल पाली के चोटिला में ओम बन्ना के मंदिर पहुंचे और वहां से जोधपुर व नागौर होते हुये वापस लाडनूं पहुंचा। इस 47 छात्राओं के भ्रमण दल के साथ सहायक आचार्य योगेश टाक, डा. प्रगति भटनागर, डा. बलवीर सिंह व डा. विनोद कस्वा भी रहे।

सोनल मानसिंह क्लब प्रस्तुति

छात्राओं का छात्राओं के लिये आयोजन

अन्तर्विद्यालयी नृत्य प्रतियोगिता में हर्षिता व समूह तथा खुशबू राठौड़ रही प्रथम

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित सोनल मानसिंह क्लब के तत्वावधान में अन्तर्वियालयी नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन 8 फरवरी को यहां महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में किया गया। प्रतियोगिता में एकल नृत्य में प्यारीदेवी हनुमानबक्स तापड़िया विद्यालय जसवंतगढ की छात्रा खुशबू राठौड़ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान बाल भारती उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुजानगढ की छात्रा साक्षी बैद ने तथा तृतीय स्थान मॉडर्न पब्लिक स्कूल कसुम्बी की छात्रा डिम्पल चिंटाला व केशर देवी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय लाडनूं की छात्र जयश्री वर्मा ने प्राप्त किया। सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सुजानगढ के ओसवाल उच्च माध्यमिक विद्यालय की हर्षिता भोजक व समूह ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान मौलाना आजाद स्कूल लाडनूं की शहनाज बानो एवं समूह ने प्राप्त किया एवं तृतीय स्थान दयानन्द सरस्वती विद्यालय, लाडनूं की छात्रा कोमल सैनी एवं समूह ने प्राप्त किया। सांत्वना पुरस्कार के लिये आदर्श विद्या मंदिर, लाडनूं की फाल्गुनी सोलंकी व समूह, प्यारीदेवी हनुमानबगस तापड़िया स्कूल, जसवंतगढ की मधु शर्मा व समूह एवं विमल विद्या विहार की गुनगुन बैंगानी व समूह की छात्राओं का चयन किया गया। सभी विजेता रही छात्राओं को पुरस्कार व प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

शिक्षा के साथ अन्य गतिविधियां सम्पूर्ण विकास के लिये आवश्यक

प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा कि शिक्षा के साथ-साथ अन्य गतिविधियां भी छात्राओं द्वारा संचालित की जाने से उनका सर्वांगीण विकास होता है। इनसे उनमें निर्णय लेने की क्षमता, प्रबंधन की कला, साहस और धैर्य का विकास होता है। इस महाविद्यालय में इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि प्रत्येक छात्रा अपने आप में सर्वगुण सम्पन्न बन कर उभरे। इस कार्यक्रम की संरचना से लेकर पूर्ण होने तक समस्त कार्य का संयोजन छात्राओं द्वारा अपने स्तर पर किये जाने को उन्होंने सराहा। विशिष्ठ अतिथि दक्षता कोठारी ने अपने सम्बोधन में कहा कि हम खुशी के लिये काम करेंगे तो खुशी नहीं मिलती, लेकिन अगर खुश होकर काम करेंगे तो खुशी अवश्य मिलेगी। मुख्य अतिथि नेहा प्रजापत ने कहा कि किसी भी असफलता से हताश नहीं होकर यह समझें कि असफलता तो सफलता की कुंजी का मार्ग होता है। प्रयास निरन्तर जारी रखने चाहिये। कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती की प्रतिमा का पूजन करके एवं प्रीति एवं समूह द्वारा गणेश वंदना नृत्य से की गई। प्रारम्भ में स्वागत गीत रेणु मोहनोत ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में समाजसेविका कंचन देवी भूतोड़िया, कनक दूगड़, अशोक कुमार बैद व अंजू बैद विशिष्ट रूप से सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अंत में सोनिका जैन ने आभार ज्ञापित किया।

छात्राओं के लिये छात्राओं ने किया आयोजन

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन छात्राओं ने छात्राओं के लिये छात्राओं द्वारा किया किया गया। जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित सोनल मानसिंह क्लब की समस्त सदस्य छात्राओं ने यह पूरा बीड़ा उठाया। इस अन्तर्विद्यालयी नृत्य प्रतियोगिता में लाडनूं शहर एवं आस पास के विद्यालयों की छात्राओं ने एकल नृत्य एवं सामूहिक नृत्य प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, संचालनकर्ता आदि सभी छात्रायें ही रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता छात्रा चेतन कंवर ने की। मुख्य अतिथि छात्रा नेहा प्रजापत एवं विशिष्ट अतिथि छात्रा दक्षता कोठारी रही। प्रतियोगिता में निर्णायक के तौर पर भी छात्रायें महिमा प्रजापत, पूजा शर्मा व मानसी जांगिड़ रही। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन छात्रा मुस्कान सोनी ने किया। कार्यक्रम का संचालन दिव्यता कोठारी, स्नेहा पारीक, संध्या वर्मा व कोमल राठौड़ ने किया।

विदाई समारोह आयोजित

लगन, धैर्य व परिश्रम से मिलती है सफलता

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने शिक्षा पूर्ण करने के बाद जीवन में निरन्तर सफलता के लिये आवश्यक गुणों के बारे में बताते हुये कहा कि पूरी लगन, धैर्य और परिश्रम को अपनाया जाने पर ही हर क्षेत्र में सफलता हासिल की जा सकती है। उन्होंने यहां 15 अप्रेल को आयोजित विदाई समारोह में आगे कहा, महाविद्यालय से विदाई को जीवन के विस्तृत क्षेत्र में प्रवेश के तौर पर देखा जाना चाहिये, जिसमें पग-पग पर परीक्षायें होती हैं और उन सब परीक्षाओं में सभी छात्राओं को हमेशा सफलता प्राप्त करनी होगी। कार्यक्रम में हिन्दी व्याख्याता अभिषेक चारण ने कहा कि छात्राओं में जहां अपनी शिक्षा का एक लक्षित पड़ाव पूर्ण कर लेने की खुशी है, वहीं उनमें उच्चतम शिक्षा ग्रहण करने का उत्साह भी है।

रश्मि बनी मिस फेयरवेल

समारोह में छात्राओं ने मिस फेयरवेल-2019 का चुनाव किया, जिसमें रश्मि बोकड़िया का चयन किया गया। इसी प्रकार मिस दिवा के लिये रंजना चिंडाला और स्पार्क आफ दी डे के लिये मुस्कान सोनी को चुना गया। कार्यक्रम में महिमा प्रजापत, रश्मि बोकड़िया, चांदनी सैनी, ज्योति जांगिड़, सुमन प्रजापत, पूजा प्रजापत, मुस्कान सोनी, करीना कायमखानी आदि ने विभिन्न गीतों पर शानदार नृत्य प्रस्तुतियां दी। इस अवसर पर स्नातक अंतिम वर्ष की छात्राओं को अन्य छात्राओं ने जहां उपहार देकर विदा किया, वहीं उनके सम्मान में ढोल-नगाड़ों के साथ नाचते हुये छात्राओं ने ऑडिटोरियम में प्रवेश किया। इस अवसर पर तीन साल के अनुभवों को एक पीपीटी में संजो कर उसका प्रदर्शन पर्दे पर किया गया।

एक सेल्फी पॉइंट बनाकर छात्राओं ने मोबाईल से बहुत सारी यादों की तस्वीरें कैद की। अंतिम वर्ष की छात्राओं ने अपने शिक्षकों को भी उपहार देकर सम्मान प्रदान किया। कार्यक्रम में डा. प्रगति भटनागर, सोनिका जैन, अपूर्वा घोड़ावत, विनोद कस्वां, सोमवीर सांगवान, डा. बलवीर सिंह, अजयपाल सिंह भाटी, योगेश टाक, अभिषेक चारण आदि उपस्थित रहे।

बैंकिंग क्षेत्र में छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य के लिये केरियर परामर्श व्याख्यान आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में छात्राओं के हितार्थ संचालित रोजगार परामर्श केन्द्र में छात्राओं के लिए बैंकिंग क्षेत्रों में रोजगार से जुड़ी जानकारियां उपलब्ध करवाने हेतु 14 फरवरी को एक व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें प्राचार्य आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में सहायक आचार्य कमल कुमार मोदी ने कहा कि आज का युग अर्थ प्रधान है और अर्थ उपार्जन के लिये हर व्यक्ति को अच्छे व्यवसाय की तलाश रहती है। युवा वर्ग नौकरी की तलाश में सबसे ज्यादा बैंकिंग सेवाओं की तरफ झुक रहा है। इसलिये इन सेवाओं में चयन की दृष्टि से छात्राओं को तैयार किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के साथ केरियर निर्माण के लिये आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय सदा से ही सजग व समर्पित रहा है। इसके लिये खोले गये ज्ञान केन्द्र में समस्त प्रकार की सहायक पुस्तकें मौजूद हैं। महाविद्यालय में समय-समय पर केरियर परामर्श कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है।

उन्होंने अपने व्याख्यान में बैंकिंग क्षेत्र में विभिन्न अवसरों के बारे में एवं इन परीक्षाओं की तैयारी कैसे करें, के बारे में छात्राओं को सम्पूर्ण जानकारी दी। मोदी ने उन्हें सरकारी व निजी बैंकों में रोजगार के अवसर तथा इनकी प्रतियोगी परीक्षा को उत्तीर्ण करने के तरीकों से अवगत करवाया। इस व्याख्यान में उन्होंने छात्राओं को बैंकिंग सेवाओं में चयन का मुख्य आधार मानी जाने वाली सांख्यिकी योग्यता, तर्क क्षमता, आंग्ल भाषा एवं सामान्य ज्ञान के महत्त्व के बारे में बताया। इसी क्रम में पुस्तक चयन एवं पाठ्य-सामग्री के बारे में भी जानकारी दी गई। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि इस महाविद्यालय में छात्राओं के लिये बैंकिंग परीक्षाओं से सम्बंधित पुस्तकों व पाठ्य-सामग्री की पूर्ण उपलब्धता है, जिनके अध्ययन से वे अपने बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकती हैं। अन्त में रोजगार परामर्श केन्द्र प्रभारी अभिषेक चारण ने छात्राओं का आभार व्यक्त किया।

भारत में कराधान विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में "भारत में कराधान" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 15 मार्च को किया गया। कार्यशाला के उद्‌घाटन सत्र में मुख्य वक्ता विषय-विशेषज्ञ नीतेश माथुर सी.ए. ने देश में प्रचलित कर प्रणाली के बारे में जानकारी देते हुये देश में लागू की गई एक कर प्रणाली जी.एस.टी. के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कर में अंतर बताते हुये माल व सेवा कर के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला व भ्रांतियों का निवारण किया।

अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अपने सम्बोधन में आम आदमी के जीवन में करों के महत्त्व के बारे में बताया और आयकर फाईल में आने वाली समस्याओं के बारे में चर्चा की। सहायक आचार्य कमल कुमार मोदी ने कार्यशाला की आवश्यकता को प्रतिपादित करते हुये करारोपण की आवश्यकता और आम आदमी की भूमिका के बारे में बताया। मुख्य वक्ता नीतेश माथुर ने इस अवसर पर छात्राओं की कर समबंधी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। अंत में अपूर्वा घोड़ावत ने आभार ज्ञापित किया।

कार्यशाला के द्वितीय सत्र में पत्र वाचन किया गया, जिसमें अवंतिका, रश्मि धोकड़िया, संध्या वर्मा, महिमा प्रजापत व दिशा वैंगानी ने पत्र वाचन किया। सत्र की अध्यक्षता कमल मोदी व सह अध्यक्षता सोनिका जैन ने की। कार्यशाला के समापन सत्र में 7-7 छात्राओं के पांच समूह बनाये जाकर "भारत में कराधान" विषय पर समूह-परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिनमें मूल्यांकन कार्य कमल मोदी, सोनिका जैन व अपूर्वा घोड़ावत ने किया।

प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिये व्याख्यान का आयोजन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में छात्राओं के हितार्थ संचालित रोजगार परामर्श केन्द्र में छात्राओं के लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं से जुड़ी जानकारियां उपलब्ध करवाने हेतु 2 फरवरी को भारतीय राज-व्यवस्था विषय पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया। प्राचार्य आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित इस व्याख्यानमाला में राजनीति विज्ञान के सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह चारण ने छात्राओं को भारतीय राज-व्यवस्था से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर परीक्षाओं की तैयारी के तरीकों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने भारतीय संविधान निर्माण से पूर्व राज-व्यवस्था की संक्षिप्त जानकारी दी तथा वर्तमान राज-व्यवस्था के पहलुओं को विस्तार से व्याख्यायित किया। अन्त में रोजगार परामर्श केन्द्र प्रभारी अभिषेक चारण ने आभार ज्ञापित किया।

अनुसूचित जाति के सशक्तिकरण पर व्याख्यानमाला आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में 30 मार्च को मासिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस बार "अनुसूचित जाति समुदाय के सशक्तीकरण में बाबू जगजीवन राम का योगदान" विषय पर वाणिज्य संकाय की व्याख्याता अपूर्वा घोड़ावत द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। घोड़ावत ने अपने व्याख्यान में बताया कि पांच दशक तक सक्रिय राजनीति में बाबू जगजीवनराम

ने अपना पूर्ण जीवन देश की सेवा व दलितों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। उनके प्रयासों के कारण ही दलितों को आरक्षण मिला, शिक्षा और नौकरी मिली तथा बराबरी वाले समाज में बराबर उठने-बैठने की महत्ता मिली। वे दलित समाज की एक ऐसी चिन्गारी के रूप में उभरे, जिसमें समूचे दलित समाज में जागृति की ज्वाला जगा दी और दलित समाज को पंक से निकाल कर प्रतिष्ठा तक पहुंचा दिया। इस व्याख्यानमाला में महाविद्यालय के व्याख्याता डॉ. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, अभिषेक चारण, रत्ना चौधरी, बलबीर सिंह चारण, सोनिका जैन, योगेश टाक आदि उपस्थित रहे। व्याख्यानमाला का संचालन सोमवीर सांगवान द्वारा किया गया।

न्याय की अवधारणा पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित आंतरिक व्याख्यानमाला में डा. बलवीर सिंह चारण ने "न्याय की अवधारणा एक विश्लेषण" विषय पर 31 जनवरी को

अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित इस व्याख्यान में डा. चारण ने न्याय को बहुपक्षीय प्रक्रिया बताया तथा कहा कि न्याय प्रत्येक शासन की सत्ता में शासक का लक्ष्य होना चाहिये। उन्होंने न्याय की अवधारणा में भारतीय व पाश्चात्य दृष्टिकोणों की चर्चा करते हुये दोनों के पक्षों को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में डा. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, रत्ना चौधरी, अभिषेक चारण, सोमवीर सांगवान, योगेश टाक, अपूर्वा घोड़ावत आदि उपस्थित थे।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में अभिभावक-शिक्षक बैठक आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 9 मार्च एवं 6 अप्रेल को विद्यार्थियों के समग्र विकास की दृष्टि से अभिभावक-शिक्षक बैठकों का आयोजन किया गया। बैठकों में अभिभावकों ने जहां महाविद्यालय एवं छात्राओं के विकास के संबंध में अनेक सुझाव देने के अलावा ग्रीष्मकालीन अवकाश के समय महाविद्यालय में कम्पनी सेक्रेट्री सीएस की कोचिंग कक्षायें शुरू करवाने का सुझाव भी रखा, जिस पर प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने विचार का आश्वासन दिया।

प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि यह शिक्षक-छात्र एवं अभिभावक बैठक एक ऐसा त्रिवेणी संगम है, जिसके द्वारा छात्र का सर्वांगीण विकास संभव होता है। उन्होंने महाविद्यालय में संचालित ज्ञान केन्द्र एवं केरियर सम्बंधी व्याख्यान एवं अन्य गतिविधियों के बारे में जानकारी दी तथा बताया कि यहां समस्त प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं सम्बंधी नवीनतम पुस्तकें व साहित्य की उपलब्धता है। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय में छात्राओं के बहुमुखी विकास का पूरा ध्यान रखा जाता है। छात्रा मेहनाज बानो ने महाविद्यालय में छात्राओं द्वारा संचालित क्लबों की गतिविधियों एवं महाविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में बताया।

बैठक के प्रारम्भ में डा. प्रगति भटनागर ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। स्वागत गीत कंचन एवं समूह ने प्रस्तुत किया। अंत में सोनिका जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया। बैठक में अभिभावकों के अलावा सभी शिक्षक भी उपस्थित रहे।

हिन्दी व्याकरण पर व्याख्यानमाला आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में आने वाले संभावित हिंदी व्याकरण के संभावित प्रश्न-बिंदुओं पर हिन्दी व्याख्याता अभिषेक चारण द्वारा 29 मार्च को विशेष व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान की उपादेयता को देखते हुये एवं छात्राओं की विशेष मांग पर इसे आगामी 1 अप्रैल से 6 अप्रैल तक और चलाया गया। प्रतिदिन सुबह 9 से 10 बजे तक यहां रोजगार परामर्श केन्द्र में इसका आयोजन किया गया।

अन्तर्विद्यालयी स्वरचित कविता-कहानी प्रतियोगिता आयोजित

बचपन से सीखें निष्कपटता, सरलता व सादगी- डॉ. मु. शांता

छात्राओं ने छात्राओं के लिये किया अभूतपूर्व आयोजन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित आचार्य महाश्रमण क्लब के तत्त्वावधान में 20 फरवरी को महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में अन्तर्विद्यालयीय स्वरचित कविता-कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में लाडनूं व आसपास के ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 तक अध्ययन करने वाले 28 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया तथा "बचपन" शीर्षक पर अपनी लिखित कवितायें व कहानियां प्रस्तुत की। प्रतियोगिता की विशेषता यह रही कि इस प्रतियोगिता के कार्यक्रम के आयोजन से लेकर संचालन, निर्णायक एवं अतिथिगण सभी छात्रायें स्वयं थीं। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कंचन स्वामी ने बताया कि आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में छात्राओं को नृत्य, लेखनकला, वक्तृत्व कला, ध्यान व योग, घुड़सवारी आदि अलग-अलग हुनर सिखाने एवं रुचि के अनुसार उनमें पारंगत करने के लिये विभिन्न क्लब स्थापित हैं, जिनका संचालन विभिन्न आचार्यों के प्रभार एवं निर्देशन में स्वयं छात्रायें करती हैं।

छात्राओं के लिये गर्व की बात

कार्यक्रम की अध्यक्ष सुमन प्रजापत ने अपने सम्बोधन में बताया कि यह छात्राओं के लिये गर्व की बात है कि वे इतने बड़े आयोजन की योजना बनाकर अपने स्तर पर विश्वविद्यालय के सहयोग से स्वयं क्रियान्वित कर रही हैं। उन्होंने एक कविता भी प्रस्तुत की। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि छात्रा नफीसा बानो, स्नेहा पारीक, मनोज दुसाद व मुस्कान बानो ने गरिमा पूर्ण प्रस्तुति के लिये अपनी साथी छात्राओं की मेहनत की सराहा तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की विशेषताओं एवं छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिये किये जा रहे प्रयासों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, डा. वीणा जैन, तेरापंथ महिला मंडल की पदाधिकारी, विभिन्न विद्यालयों के शिक्षण एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे। इनका स्वागत चेतना राजपुरोहित, दिव्यता कोठारी, निकिता स्वामी, मुस्कान, सरिता राहड़, रंजना घिंटाला, नफीसा बानो, प्रियंका सोनी आदि ने किया।

ये रहे विजेता

अन्तर्महाविद्यालयीय स्वरचित कविता- कहानी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सुजानगढ के ओसवाल सीनियर सैकेंडरी स्कूल का सचिन गुर्जर रहा। द्वितीय स्थान पर केके सीनियर सैकेंडरी स्कूल की सदिया बानू एवं तृतीय स्थान पर आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय की अभिलाषा स्वामी रहे। सांत्वना पुरस्कार के रूप में मौलाना आजाद सीनियर सैकेंडरी स्कूल की शहनाज बानो एवं सुजानगढ के बाल भारती उच्च माध्यमिक विद्यालय की चंचल प्रजापत का चयन किया गया। इनके अलावा प्रतियोगिता के अलावा मात्र पांचवीं कक्षा की छात्रा आकांक्षा को पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपनी प्रस्तुति देने पर पुरस्कार प्रदान किया गया।

उच्चारण, भाव व शैली पर ध्यान दें

प्रतियोगिता की समीक्षक परवीना भाटी ने पढाई के साथ सर्वांगीण विकास एवं प्रतिभा विकास के लिये प्रतियोगिता के इस प्रयोग की सराहना की। समीक्षक डा. शांता जैन ने बच्चों में सीखने की ललक और परिपक्वता की पकड़ के बारे में बताया। उन्होंने प्रस्तुतीकरण में उच्चारण एवं भाव व शैली के बारे में बताया। उन्होंने बचपन से सीखने की आवश्यकता बताई तथा कहा कि निष्कपटता, झूठ से दूर रहने, सरलता व सादगीपन से प्रेरणा लेनी चाहिये। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि जिस उद्देश्य से ये क्लब प्रारम्भ किये गये थे, उनमें उन्हें इस कार्यक्रम से उद्देश्य पूरे होते दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता का लक्ष्य जीतना व सीखना, न कि हारना रखा। सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं नृत्य के साथ सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। छात्रा सोनम कंवर ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। आशा स्वामी ने महाश्रमण क्लब का परिचय प्रस्तुत किया। क्लब के प्रभारी अभिषेक चारण ने प्रतियोगिता का विवरण प्रस्तुत किया। प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में छात्राओं सरिता शर्मा, सुरैया बानो व सृष्टि बागड़ा ने भूमिका निभाई। कार्यक्रम का संचालन छात्राओं दक्षता कोठारी व मेहनाज बानो ने किया।

शहीद भगत सिंह की पुण्य तिथि पर कार्यक्रम आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 23 मार्च को शहीदे-आजम भगत सिंह के बलिदान दिवस को मनाया जाकर उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने भगत सिंह के जीवन के विभिन्न उद्धरणों को प्रस्तुत करते हुये कहा कि उन्होंने अपना बलिदान देकर पूरे भारत को जगा दिया था। हमें उनके बलिदान दिवस पर राष्ट्र के विकास और राष्ट्रभक्ति को अपना मुख्य ध्येय बनाने का संकल्प लेना चाहिये। अभिषेक चारण ने शहीद भगतसिंह को देश का महान सपूत बताते हुये उनके जीवन पर प्रकाश डाला। जगदीश यायावर ने आजादी की लड़ाई की दो धाराओं अहिंसा और हिंसक तरीकों से मुकाबले पर प्रकाश डाला और कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में दोनों का सामंजस्य आवश्यक था। उन्होंने आगामी लोकतंत्र पर्व पर मतदान अवश्य करने की अपील की। कार्यक्रम में आरती सिंघानिया ने भगत सिंह के जीवन और उनके आदर्शों पर प्रकाश डाला। अर्चना शर्मा ने इस अवसर पर देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में सोनिका जैन, कमल मोदी, बलवीर चारण, अपूर्वा घोड़ावत आदि उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय के फिर दो विद्यार्थियों ने योग में बनाया विश्व रिकॉर्ड

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदशालय के अन्तर्गत अध्ययन कर रहे योग एवं जीवन विज्ञान विषय में एम.ए. उत्तरार्द्ध के दो विद्यार्थियों ने योगासन का उत्कृष्ट प्रदर्शन करके विश्व रिकॉर्ड कायम किया है। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि योग एवं जीवन विज्ञान विषय में एम.एम कर रहे मंगलाराम पटेल ने राजस्थान सरकार व पतंजलि योगपीठ के संयुक्त तत्त्वावधान में कोटा में आयोजित योग समारोह में लगातार 25 मिनट तक अबाध रूप से ऊष्ट्रासन (केमल पोज) में योगासन का प्रदर्शन किया। इसी प्रकार कोटा के इसी समारोह में श्यामलाल भाटी ने स्वस्तिकासन में निरन्तर 4 घंटे 11 मिनट स्थिर रह कर योग-प्रदर्शन किया। इन दोनों ही विद्यार्थियों का नाम गोल्डन बुक आफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है, जिसका उन्हें प्रमाण पत्र भी जारी किया गया है। यहां गौरतलब है कि विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा में अध्ययन कर रहे चार अन्य विद्यार्थी भी इससे पूर्व योग में बेहतरीन प्रदर्शन करके पांच विश्व रिकॉर्ड बना चुके हैं। अब तक विश्वविद्यालय के 6 विद्यार्थियों ने 7 विश्वरिकॉर्ड कायम किये हैं।

उत्तर भारत योग चैम्पियनशिप में संस्थान के विद्यार्थियों ने स्वर्ण व रजत पदक हासिल किये

उत्तर भारत योग चैम्पियनशिप में जैन विश्वभारती संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की छात्राओं की टीम ने 20-25 आयुवर्ग की महिला वर्ग में स्वर्ण पदक जीत कर कीर्तिमान स्थापित किया, वहीं विभाग के छात्रों ने इसी आयु वर्ग की पुरूष प्रतियोगिता में रजत पदक हासिल किया। प्रतियोगिता पंजाब योग स्पोर्ट्स एसोसियेशन के तत्वावधान में आयोजित की गई थी, जो अबोहर के महर्षि दयानन्द कॉलेज में 28 अप्रेल 2019 को सम्पन्न हुई। प्रतियोगिता में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, चंडीगढ, उत्तर प्रदेश व हिमाचल प्रदेश के लगभग 350 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

जैविभा विश्वविद्यालय की स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाली महिला टीम में प्रवीणा कंवर, सीम शेखावत, इन्द्रा रैवाड़, राजू जाट व आकांक्षा राजपुरोहित शामिल थी तथा रजत पदक जीतने वाली पुरूष टीम में प्रेमाराम झूरिया, महेश सिंह, हीरालाल स्वामी व जगदीश मीना शामिल थे। पदक प्राप्त कर लौटे सभी विद्यार्थियों ने यहां पहुंचने पर

अपनी ट्रॉफी कुलपति को भेंट की। कुलपति ने उन्हें बधाई दी और विश्वविद्यालय में योग के लिये समस्त प्रकार की सुविधायें उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया।

मेहता बने विश्वविद्यालय के कुलसचिव

संस्थान के कुलसचिव पद पर 13 फरवरी, 2019 से रमेश कुमार मेहता ने पदभार ग्रहण किया। इससे पूर्व कुलसचिव पद पर कार्यरत विनोद कुमार कक्कड़ ने 2 वर्ष 6 माह तक अपनी सेवायें इस पद पर देने के बाद अपने निवास क्षेत्र के निकटतम संस्थान में पद संभाल लेने से यह पद रिक्त हो गया था। मेहता इससे पूर्व हरियाणा में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक तथा चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय सिरसा में डिप्टी रजिस्ट्रार पद पर कार्यरत रहे थे, जहां से वे सेवानिवृत होने के बाद उन्होंने लगभग दो वर्ष तक जे.सी.डी. सिरसा में डिप्टी रजिस्ट्रार का कार्य किया।

स्वरचित बाल कहानी लेखन प्रतियोगिता में भंसाली प्रथम रही

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के लिये आयोजित की गई स्वरचित बाल कहानी लेखन प्रतियोगिता 2017-18 के परिणामों की घोषणा करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर संगीता भंसाली, गंगाशहर रही। द्वितीय स्थान गीता यादव, लाडनूं ने प्राप्त किया एवं तृतीय स्थान पर अबरार, जयपुर रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता के लिये प्रथम पुरस्कार स्वरूप 3100 रूपये, द्वितीय के लिये 2100 रूपये और तृतीय स्थान पर रहने वाले विजेता को 1100 रूपये पुरस्कार के रूप में दिये जाते हैं।

पौराणिक व ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है वसंत पंचमी

समारोह पूर्वक मनाया गया वसंत पंचमी उत्सव

संस्थान के प्राकृत व संस्कृत विभाग में 9 फरवरी को वसंत पंचमी का पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने वसंत पंचमी के महत्व को प्रतिपादित करते हुये कहा कि यह दिवस पौराणिक व ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने सरस्वती के जन्म की कथा सुनाई और कहा कि सरस्वती के कारण सम्पूर्ण प्रकृति में वाणी का संचार हुआ था। इसी कारण वसंत पंचमी के दिन को वाग्देवी के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने पर्व का ऐतिहासिक महत्त्व बताते हुये कहा कि इसी दिन पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गौरी को मारकर आत्म बलिदान किया था। इसी दिन राजा भोज व हर्षवर्द्धन लोक कल्याण के कार्य करते थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि वसंत पंचमी को दो माताओं की पूजा की जाती है। प्रथम मां प्रकृति है, जो हमें आश्रय देती है और द्वितीय मां सरस्वती है, जो हमें विद्या और विविध कलाओं का ज्ञान देती है। इस दिन से वसंत ऋतु का प्रारम्भ होता है और प्रकृति अपना श्रृंगार करती है। उन्होंने इस दिन यह संकल्प लेने की जरूरत बताई, जिसमें हर व्यक्ति बौद्धिक विकास पर बल दे और भौतिक विकास पर कम ध्यान देवे। कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण व सरस्वती की पूजा-अर्चना करके किया गया। कार्यक्रम का संचालन डा. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया।

छात्राओं ने बताया वसंत पंचमी का महत्व

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में भी वसंत पंचमी उत्सव को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. एपी त्रिपाठी ने विद्या की देवी मां शारदा की आराधना का महत्त्व बताया। कार्यक्रम में छात्रा अफसाना राव ने विद्यार्थी जीवन में वसंत पंचमी

का महत्त्व बताया। दीपिका सोनी ने विभिन्न राज्यों की वसंत पंचमी का परम्पराओं से अवगत करवाया। सोनम कंवर, निकिता शर्मा व उर्मिला डूकिया ने वसंत पंचमी के बारे में विभिन्न प्रस्तुतियां दी। प्रारम्भ में रेणु मुहणोत ने सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरूआत की। स्नेहा पारीक ने शारदा गीत प्रस्तुत किया। अभिषेक चारण ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा वसंत शीर्षक से कविता सुनाई।

सरस्वती पूजन कार्यक्रम

शिक्षा विभाग में वसंत-पंचमी पर सरस्वती पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने इस अवसर पर जीवन में विद्या की महत्ता बताई। सह आचार्य डॉ. गिरीराज भोजक ने भारतीय संस्कृति में त्यौहारों का महत्त्व बताते हुये सरस्वती पूजन की महत्ता पर प्रकाश डाला। अम्बिका शर्मा ने वसंत पंचमी पर्व मनाने के कारण बताये। कार्यक्रम का प्रारम्भ सरस्वती पूजन के साथ किया गया। अंत में डॉ. आभा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

धूमधाम से मनाया गणतंत्र दिवस समारोह

संस्थान में गणतंत्र दिवस के अवसर पर 26 जनवरी को प्रातः प्रांगण में भव्य समारोह आयोजित किया गया। प्रारम्भ में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने झंडारोहण किया। कार्यक्रम में उन्होंने भारतीय संविधान की महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, कुलसचिव वीके कक्कड़ ने भी विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर एन.सी.सी. द्वारा परेड का आयोजन किया गया। गीतिकाओं एवं देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति के अलावा छात्राओं ने आकर्षक नृत्यों के कार्यक्रम प्रस्तुत करके सबको मुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में प्रो. दामोदर शास्त्री, डा. जसबीर सिंह, डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. भावाग्रही प्रधान, डा. जुगलकिशोर दाधीच आदि उपस्थित थे।

सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास का सशक्त माध्यम है सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं - प्रो. दूगड़

चार दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगितायें आयोजित

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम सांस्कृतिक प्रयोगिताएं होती हैं। विद्यार्थियों को इन प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर सहभागिता करनी चाहिए। वे यहां 8-11 जनवरी को विश्वविद्यालय में आयोजित वार्षिक सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सभी प्रतिभागी प्रथम स्थान प्राप्त नहीं कर सकते, लेकिन अपनी कमियों को दूर करते हुए एक अच्छे प्रतिभागी बन सकते हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रतियोगिताओं के महत्त्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि ये प्रतियोगिताएं आपको एक नई ऊर्जा प्रदान करने वाली होती हैं। कार्यक्रम का प्रारम्भ सरस्वती की मूर्ति पर माल्यार्पण तथा सरस्वती वंदना से हुआ। अंत में सांस्कृतिक समिति की समन्वयक डॉ. अमिता जैन ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया।

बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया छात्राओं ने

चार दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता के अन्तर्गत नाटक प्रतियोगिता में रश्मि एवं ग्रुप ने संस्कारों पर आधारित नाटक, ज्योति एवं ग्रुप ने गरीबी व नेत्रदान की महता पर आधारित नाटक प्रस्तुत किये, वहीं कंचन ग्रुप ने माता-पिता की सेवा, मुमुक्षु सारिका व ग्रुप ने आधुनिकता, इच्छाओं पर नियंत्रण एवं संतोष से संबंधित, अंबिका व ग्रुप ने अनपढ़ता आदि सामाजिक विषयों पर आधारित नाटक प्रस्तुत किये।

सामूहिक गान प्रतियोगिता में लगभग 40 प्रतिभागियों, रंगोली प्रतियोगिता में 185 प्रतिभागी छात्राओं, एकल लोक नृत्य प्रतियोगिता में 27 प्रतिभागियों ने और सामूहिक लोकनृत्य प्रतियोगिता में 40 प्रतिभागियों व मेहंदी प्रतियोगिता में 48 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिता में कनक दूगड़, अंजू बैद, डॉ विनोद, मुकुल सारस्वत, डॉ. सुनीता इन्दौरिया, लिपि दूगड़, सोनिका जैन, दिव्या राठौड़, डॉ. पुष्पा मिश्रा, डॉ. गिरिराज भोजक, डा. सरोज राय, डॉ. प्रगति भटनागर, प्रो. बी.एल. जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. गोविन्द सारस्वत, गीतापूनियां व डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने अलग-अलग प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका निभाई। अंत में डॉ अमिता जैन व डॉ आभा सिंह ने आभार ज्ञापित किया। प्रतियोगिता में आमंत्रित अतिथि सुमन कक्कड, संस्थान के संकाय सदस्य एवं समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे।

नववर्ष पर कार्यक्रम का आयोजन

जीवन की सफलता के लिये जरूरी है प्रेरणा, आनन्द व पुरुषार्थ- मुनि जयकुमार

मुनिश्री जयकुमार ने कहा कि नववर्ष आत्मचिंतन करने का समय होता है। अपनी क्षमताओं के अनुरूप कितना कार्य किया गया, इस पर चिंतन आवश्यक है। वे संस्थान में 1 जनवरी को नववर्ष पर आयोजित किये गये कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि हमें अतीत से प्रेरणा लेनी चाहिये, वर्तमान को आनन्द पूर्वक जियें और भविष्य की कल्पनाओं को साकार करने के लिये पुरुषार्थ करें। प्रेरणा, आनन्द व पुरुषार्थ ये तीनों सूत्र केवल एक वर्ष नहीं, बल्कि पूरे जीवन को सफल व आनन्दमय बना देंगे।

सबक लेने व चुनौतियों के लिये तैयार होने का समय

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में बीते वर्ष को सबक देने वाला और नूतन वर्ष को चुनौतियों के रूप में मानते हुये कहा कि हमें हर चुनौती को पूरा करना है। प्रो. दूगड़ ने नई तकनीक के प्रयोग एवं कार्यों को नियत समय में पूरा करने की आवश्यकता बताई तथा कहा कि संस्थान को नई ऊंचाई तक पहुंचाने के लिये यह आवश्यक है। साथ ही उन्होंने आचार्यों की कृपा, मुनियों के सान्निध्य और मेलजोल बढ़ाने का महत्त्व भी बताया और कहा कि इससे सकारात्मकता एवं ऊर्जा बढ़ती है। मुनिश्री जयकुमार के मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

शिक्षा विभाग में भी नव वर्ष पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में डा. अमिता जैन,डा. मनीष भटनागर, डा. सरोज राय, देवीलाल, डा. गिरधारीलाल, दिव्या राठौड़ आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

राष्ट्रीय मान्यता नहीं होने पर भी जन-जन की भाषा है राजस्थानी

विश्व मातृभाषा दिवस पर समारोह का आयोजन, प्रतियोगिताओं में जौहरा व दक्षता रही प्रथम

विश्व मातृभाषा दिवस के अवसर पर 21 फरवरी को संस्थान के ऑडिटोरियम में एक समारोह का आयोजन किया गया। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी की अध्यक्षता में हुये इस समारोह में मुख्य अतिथि दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने राजस्थानी भाषा को मान्यता दिये जाने एवं उसके विकास को लेकर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि मातृभाषा हृदय के उद्‌गारों को व्यक्त करने वाली भाषा होती है। राजस्थान के विद्यालयों में बच्चों को अध्यापन करवाये जाने की भाषा राजस्थानी है और यहां राजस्थानी में ही पढ़ाये जाने पर बच्चा अच्छी तरह से सीख पाता है। भले ही राजस्थानी को शासकीय मान्यता नहीं मिली हो, लेकिन प्रदेश में जन-जन की भाषा आज भी यही है। प्रो. त्रिपाठी ने भारत को बहुभाषी देश बताते हुये कहा कि जिन देशों में एक भाषा को राजभाषा स्वीकार किया गया है, उन सभी देशों ने तरक्की की है। रूस, चीन, जापान, जर्मनी, इस्राइल इसके प्रमुख उदाहरण हैं। भाषा को लेकर विवाद नहीं होना चाहिये।

सब भाषाओं की जननी संस्कृत का महत्त्व नहीं भूलें

अध्यक्षता करते हुये प्रो. रेखा तिवाड़ी ने कहा कि हमारा देश विविधता सम्पन्न है और भाषा सम्बंधी विविधतायें भी बहुत हैं, लेकिन समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत है। हमें संस्कृत के महत्त्व को समझना चाहिये। उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी व रशियन भाषाओं में एकरूपता वाले शब्दों का उदाहरण देते हुये कहा कि सभी शब्द मूल रूप से संस्कृत से ही निकले हैं। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने मातृभाषा और राजभाषा तथा शिक्षण में भाषाओं का स्तर व मान्यता के बारे में इतिहास बताते हुये कहा कि मातृभाषा के विकास पर जोर दिया जाना

आवश्यक है। प्रतियोगिता समन्वयक डा. अनिता जैन ने कहा कि मातृभाषा में शिक्षा दिया जाना शिक्षा को सरल व सुबोध बनाता है। अंत में डा. सत्यनारायण भारद्वाज ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डा. गिरिराज भोजक, अभिषेक चारण, डा. आभासिंह, सोनिका जैन आदि उपस्थित रहे।

गायन, भाषण व पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित

विश्व मातृभाषा दिवस समारोह के अन्तर्गत द्वितीय चरण में मातृभाषा पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें छात्राओं ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति दी। प्रारम्भ में एकल गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिनमें कुल 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर जौहरा फातिमा रही। द्वितीय स्थान पर आशा स्वामी और तृतीय स्थान पर सैयद निखतनाज रही। भाषण प्रतियोगिता में कुल 7 प्रतिभागी छात्राओं ने हिस्सा लिया। इनमें से प्रथम दक्षता कोठारी रही तथा द्वितीय आयुषी सैनी व तृतीय स्थान पर सुविधा जैन रही। पेंटिंग प्रतियोगिता में कुल 6 छात्राओं ने हिस्सा लिया। निर्णायकों में डा. गिरिराज भोजक व अभिषेक चारण थे।

मंगल भावना समारोह आयोजित

जो सदा मंगलमय, आनन्दमय व सत्य की खोज में हो वही है संत- मुनिश्री जयकुमार

मुनिश्री जयकुमार ने कहा है कि जो सदा मंगलमय रहे, सदा आनन्दमय रहे और सदा सत्य की खोज में रहता है, वही संत होता है। संत के लिये स्थान की प्रतिबद्धता नहीं रहनी चाहिये। जहां आसक्ति हो, वहां अध्यात्म का मार्ग नहीं होता। अनासक्ति से ही व्यक्ति भीतर आत्मा तक पहुंच पाता है। संतों के पास जाने से व्यक्ति का कल्याण हो सकता है। अगर उनके दो वचन भी व्यक्ति धारण कर ले तो कल्याण निश्चित है। महापुरुषों की शक्ति से व्यक्ति आगे बढ सकता है। वे यहां संस्थान में स्थित सेमिनार हॉल में 26 फरवरी को आयोजित मंगल भावना समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। समारोह उनके यहां वृद्ध साधु सेवा केन्द्र के व्यवस्थापक प्रभार से मुक्त होने व यहां से प्रस्थान से पूर्व आयोजित किया गया था। मुनिश्री ने कहा कि जहां आनन्द होता है, वहां अध्यात्म है और जहां अध्यात्म होता है, वहां आनन्द है।

राग-द्वेष से रहित होती है साधना

समारोह में सेवा केन्द्र के नये व्यवस्थापक मुनिश्री जम्बूकुमार स्वामी का स्वागत भी किया गया। मुनिश्री जम्बू कुमार ने कहा कि जैन दर्शन में साधना राग-द्वेष से रहित होती है। साधना का प्रथम तत्त्व वैराग्य है। उन्होंने कहा कि अन्तर्मुखी सदैव खिलता है। संतता में सुख-दुःख, अनुकूलता-प्रतिकूलता सब निर्भाव होती है। आनन्द हमारे भीतर है। ज्ञाता व द्रष्टा का भाव बनने पर आनन्द स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने सम्बोधन में मुनिश्री जम्बू कुमार का स्वागत किया एवं मुनिश्री जयकुमार के प्रति आभार ज्ञापित करते हुये उनके लाडनूं पुनरागमन के लिये निवेदन किया। प्रो. दूगड़ ने कहा कि जिस संस्थान में संत का आवागमन ज्यादा होता है, उसका उतना ही ज्यादा विकास होता है। उन्होंने मुनि जयकुमार की तप साधना की प्रशंसा करते हुये कहा कि उनके पास जैन धर्मावलम्बियों के अलावा भी बहुत सारे महत्त्वपूर्ण लोगों का आना-जाना रहता था, जिससे विश्वविद्यालय के बारे में लोगों को जानकारी मिलती थी। उन्होंने अधूरे रहे ''महाप्रज्ञ स्मृति ग्रंथ'' को पूर्ण करने के लिये एवं अन्य कार्यों के लिये उनसे पुनः लाडनूं पधारने का निवेदन किया।

आसक्ति को तोड़ने के लिये होती है साधना

प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि एक जगह रहने से संतों में उस जगह के प्रति आसक्ति हो जाती है और जैन पद्धति में आसक्ति को तोड़ने की साधना की जाती है। अन्य क्षेत्र के लोगों को भी उनके प्रवास का लाभ मिले इसलिये संतों का आवागमन सभी क्षेत्रों के लिये निर्धारित किया जाता है। जैन विश्व भारती के सहमंत्री जीवनमल मालू ने पीपीटी के माध्यम से मुनिश्री जयकुमार के प्रवास काल के कार्यक्रमों को प्रदर्शित किया एवं मंगल भावनायें व्यक्त की। विमल विद्या विहार सीनियर सैकेंडरी स्कूल की प्राचार्या विनीता धर ने अपनी भावनायें व्यक्त की। प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने सभी संतों का परिचय प्रस्तुत किया। अंत में विजयश्री शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में मुनिश्री मोहित कुमार, मुनिश्री धवल कुमार, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, प्रो. अनिल धर, प्रो. रेखा तिवाड़ी, प्रो. बीएल जैन, डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. जुगलकिशोर दाधीच, डा. जसबीर सिंह, आरके जैन आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डा. योगेश कुमार जैन ने किया। मुनि जम्बू कुमार ने कार्यक्रम से पूर्व जैविभा विश्वविद्यालय का सहवर्ती संतों एवं कुलपति के साथ अवलोकन किया और जानकारी प्राप्त की।

महिलाओं के यौन उत्पीड़न पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

छेड़छाड़ व उत्पीड़न की घटनाओं की रोकथाम के लिए जागरूकता आवश्यक

संस्थान के यौन उत्पीड़न विरोधी प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में ''कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न'' विषय पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन । अप्रैल को किया गया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुये कहा कि जागरूकता सबके लिये आवश्यक है। छेड़छाड़ एवं यौन उत्पीड़न की घटनायें कहीं भी हो सकती हैं। इन्हें लेकर किसी तरह का भय नहीं रखें और जागरूक रह कर उनका मुकाबला करें। घटनाओं को बर्दाश्त करना खतरनाक साबित हो सकता है। उन्होंने फब्तियां कसने, गलत मैसेज भेजने आदि की घटनाओं को हलके में नहीं लेकर गंभीरता से लेने और बिना हिचक या डर के शिकायत करने की आवश्यकता बताई।

यौन उत्पीड़न से होता है महिलाओं के विभिन्न अधिकारों का हनन

कार्यशाला में यौन उत्पीड़न विरोध के क्षेत्र में पिछले 15 वर्षों से कार्य कर रहे विशाखा संस्थान जयपुर की डा. मंजु नांगल व रचना शर्मा ने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न कानून के बारे में जानकारी दी और इस सम्बंध में समितियों के गठन और उनके कार्य तथा शिकायत दर्ज करने के तरीके के साथ महिला के अधिकारों के बारे में जानकारी दी। सामाजिक सलाहकार रचना शर्मा ने बताया कि अधिकार काफी संघर्षों के बाद मिलते हैं। कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न कानून 13 सालों के संघर्ष के बाद बन पाया। उन्होंने कहा कि यौन उत्पीड़न से महिलाओं के समानता के अधिकार, रोजगार व व्यापार करने के अधिकार और सम्मान के साथ जीने के अधिकार छिन जाते हैं और उसके संविधानप्रदत्त अधिकारों का हनन हो जाता है। महिलाओं के साथ उसकी पढ़ाई के दौरान ही यह शुरू हो सकता है। कार्यशाला का संचालन यौन उत्पीड़न विरोधी प्रकोष्ठ की समन्वयक डॉ. पुष्पा मिश्रा ने किया।

प्रधानमंत्री की 'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम देख विद्यार्थी हुये अभिभूत

ऑडिटोरियम के विशाल पर्दे पर सीधा प्रसारण

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा विद्यार्थियों को परीक्षा के बोझ से तनाव मुक्त करने के लिये उनसे सीधे प्रसारण के रूप में ''परीक्षा पे चर्चा 2.0 : परीक्षा पर बात-प्रधानमंत्री मोदी के साथ'' कार्यक्रम का आयोजन 29 जनवरी को संस्थान के महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में किया गया। दिल्ली के ताल कटोरा स्टेडियम में देश और विदेश के स्टूडेंट्स से परीक्षा से जुड़े कई पहलुओं पर बातचीत के इस कार्यक्रम को यहां देखने-सुनने और परीक्षा सम्बंधी मंत्र ग्रहण करने के लिये विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थी व शिक्षकों ने उपस्थित रह कर अपनी रुचि दिखाई। यहां ऑडिटोरिम की विशाल स्क्रीन पर प्रदर्शित सीधे प्रसारण के दौरान विद्यार्थियों ने अनेक बार तालियां बजा कर अपनी सहमति और खुशी प्रकट की। शो के दौरान दोनों हाथों व एक पैर से विकलांग एक छात्रा द्वारा वाद्य-यंत्र वादन प्रस्तुत किया गया, तो सभी दंग रह गये और उसे प्रेरणास्पद माना। इस दृश्य पर सबने खूब तालियां बजाई। कार्यक्रम में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि प्रधानमंत्री का कार्यक्रम शानदार रहा। यह विशेष व अनूठा प्रयास है कि देश के प्रधानमंत्री तक विद्यार्थियों की चिंताओं और परीक्षा की तैयारियों में शामिल हो रहे हैं।

सांस्कृतिक प्रतिभा खोज में किरण एवं समूह नाटक में द्वितीय व चित्रकला में दुर्गा तृतीय रही

राजस्थान युवा बोर्ड की ओर से यहां 14 फरवरी को आयोजित ब्लॉक स्तरीय युवा सांस्कृतिक प्रतिभा खोज महोत्सव-2019 में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के 22 विद्यार्थियों ने चित्रकला, नाटक, नृत्य आदि में भाग लिया। यहां आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित इन प्रतियोगिताओं में नाटक प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की 11 छात्राओं ने भाग लिया। सांस्कृतिक समन्वयक डा. अमिता जैन ने बताया कि चित्रकला में एक और सामूहिक नृत्य में 6 छात्रायें सम्मिलित हुईं। इन प्रतियोगिताओं में नाटक प्रतियोगिता में किरण एवं समूह ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा चित्रकला प्रतियोगिता में दुर्गा कुमारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अल्पकालिक टैली व इंगलिश स्पोकन कोर्सेज का संचालन

कौशल विकास कार्यक्रम

संस्थान में कौशल विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत संचालित अल्पकालीन व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के तहत कम्प्यूटर एकाउंटिंग टैली एवं अंग्रेजी स्पोकन कोर्स की कक्षाओं का संचालन किया गया। 2 मार्च को शुभारंभ पर शैक्षणिक अधिकारी विजय कुमार शर्मा ने बताया कि इन दोनों प्रशिक्षण कार्यक्रमों से उन सभी लोगों को लाभ पहुंच पायेगा, जो पढ़ाई कर रहे हैं अथवा कोई नौकरी या व्यवसाय कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि इंगलिश वर्तमान में प्रत्येक गतिविधि का माध्यम बन चुकी है और इंगलिश स्पोकन से ही व्यक्ति स्मार्ट बनकर उभरता है। इसी प्रकार पुराने खाते-बहियों का स्थान अब कम्प्यूटर ने ले लिया है और सभी व्यापारी अपना हिसाब-किताब कम्प्यूटर में रखते हैं और मेंटेन करते हैं। शर्मा ने बताया कि युग के साथ चलने पर ही सफलता मिल पाती है। इस अवसर पर सोमवीर सांगवान, सोनिका जैन, राजेन्द्र बागड़ी, पंकज भटनागर, महेन्द्र सेठी आदि उपस्थित थे।

अंग्रेजी सम्भाषण कोर्स समापन

अल्पकालीन कोर्सेज के अन्तर्गत एक माह के इंग्लिश स्पोकन कोर्स के समापन पर 4 अप्रेल को अध्यक्षता करते हुये समन्वयक विजयकुमार शर्मा ने कहा कि अंग्रेजी भाषा की जानकारी आज वैश्विक जरूरत बन चुकी है। अंग्रेजी सम्भाषण कला सीखने के बाद व्यक्ति विश्व में कहीं भी जाये तो उसे भाषा की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा संचालित विविध अल्पकालीन पाठ्यक्रमों की जानकारी दी और ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान उनमें प्रवेश लेकर कौशल सीखने के लिये प्रेरित किया। प्रशिक्षक डा. सोमवीर सांगवान ने वैश्विक अंग्रेजी बोलने के लिये प्रेरित किया और कहा कि अंग्रेजी आज देश-विदेश में सम्प्रेषण की भाषा बन चुकी है। डॉ. विकास शर्मा ने विद्यार्थी को हुनर सीखने की आवश्यकता बताई तथा कहा कि प्रत्येक सीखी हुई विद्या जीवन भर काम आती है। डा. जगदीश यायावर व अजयपाल सिंह भाटी ने भी अंग्रेजी को अपने रोजमर्रा काम में लेकर इसमें पारंगत बनने की आवश्यकता बताई। इस अवसर पर प्रशिक्षु भूमिका सोनी, लीला मंडा, वेदिका स्वामी, विकास ढाका, धीरज स्वामी, महेन्द्र जांगिड़ आदि ने अपने अनुभव साझा किये तथा अंग्रेजी में वक्तव्य देते हुये बताया कि यहां वे बहुत ही आसानी से अंग्रेजी बोलना सीख पाये। इस अवसर पर सभी प्रशिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

अल्पकालीन टैली कोर्स का समापन

टैली एवं कंप्यूटर एकाउंटिंग कोर्स के समापन 6 अप्रेल को आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि प्रत्येक युवा एवं विद्यार्थी को अधिकतम कौशल प्राप्त करने को हमेशा उद्यत रहना चाहिये। एकाउंटिंग की जानकारी तो आज के अर्थ-युग में सबके लिये आवश्यक बन गई है। उन्होंने टैली और जीएसटी के ज्ञान को कॅरियर बनाने के लिये भी उपयोगी विधा बताया। कार्यक्रम में वित्ताधिकारी आरके जैन ने हिसाब-किताब रखने की विधियों के ज्ञान को जीवन के लिये सबसे आवश्यक बताया तथा कहा कि इस कम्प्यूटर युग में टैली की जानकारी बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। जगदीश यायावर व सोनिका जैन ने भी टैली को महत्त्वपूर्ण विधा बताते हुये इसका ज्ञान हासिल करके जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये प्रेरित किया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले महेन्द्र जांगिड़, मोहम्मद खालिद, मुरलीमनोहर शर्मा, पूजा वैद, नीतु जोशी, मोनालिका आदि ने भी अपने अनुभव सुनाये और प्रशिक्षक राजेन्द्र बागड़ी व सोनिका जैन एवं कार्यक्रम समन्वयक विजयकुमार शर्मा के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षण प्राप्त युवाओं को प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया। कार्यक्रम में शोध निदेशक प्रो. अनिल धर, डा. जुगलकिशोर दाधीच, डा. सोमवीर सांगवान, पंकज भटनागर, राजेन्द्र कुमार बागड़ी, सोनिका जैन, विजयकुमार शर्मा आदि उपस्थित रहे।

हेयर स्टाईल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

संस्थान में महिला कौशल विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित 15 दिवसीय केश-सज्जा एवं सौंदर्य प्रशिक्षण शिविर का समापन 20 फरवरी को समारोह पूर्वक किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम समन्वक विजय कुमार शर्मा ने कहा कि महिलाओं में कला के प्रति जागरूकता एवं स्वावलम्बन के लिये उन्हें तैयार करने के लिये यह विश्वविद्यालय निरन्तर अनेक प्रकार की गतिविधियां संचालित करता रहता है। यहां सीखे हुये हुनर महिलाओं के लिये जीवन भर काम आने वाले सिद्ध होते हैं।

कार्यक्रम में हेयर स्टाईल प्रशिक्षिका कमलेश ने बताया कि सौंदर्य प्रशिक्षण का कोर्स बहुत विशाल है, लेकिन छोटे-छोटे कोर्स के माध्यम से इसे आसानी से हृदयंगम किया जा सकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा संचालित कोर्सेज के लिये अपनी सेवायें देने को अपना गौरव बताया। विशिष्ट अतिथि जगदीश यायावर ने कलायें सीखने को महिलाओं की विशेषताओं में वृद्धि करना बताया और हर हुनर सीखने के लिये उद्यत रहने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम में नीतु जोशी, विनीता कुमारी पाठक, योगिता शर्मा, मोनिका सैन आदि ने प्रशिक्षण के अपने अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया।

सात दिवसीय एनएसएस शिविर का आयोजन

विद्यार्थी जीवन में ही समाज सेवा व राष्ट्र सेवा के गुणों का विकास करती है राष्ट्रीय सेवा योजना

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) ईकाई के सात दिवसीय शिविर का शुभारम्भ 1 फरवरी को किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि महात्मा गांधी व स्वामी विवेकानन्द के स्वप्नों को साकार करने के लिये राष्ट्रीय सेवा योजना का शुभारम्भ विद्यालयों व महाविद्यालयों स्तर पर किया गया, जिसके द्वारा विद्यार्थियों में सामाजिक जागरूकता, देश के नव निर्माण, जनसेवा की भावनायें बलवती होती है। साक्षरता संबंधी कार्य, पर्यावरण सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं सफाई आपातकालीन या प्राकृतिक आपदा के समय पीड़ित लोगों की सहायता आदि समाजपयोगी कार्यों में रत रहने से विद्यार्थी जीवन से ही उनमें समाज सेवा या राष्ट्र सेवा के गुणों का विकास होता है।

विशिष्ट अतिथि जगदीश यायावर ने एनएसएस की समस्त स्वयंसेविकाओं से सात दिनों के शिविर में जन जागरूकता, समाज को समझने, श्रमदान करने, राष्ट्र के लिये काम करने आदि का पूरा आनन्द तल्लीनता के साथ लेने के लिये प्रेरित किया तथा कहा कि जब तक किसी कार्य को पूरे मनोयोग द्वारा नहीं किया जाता, तब तक उसे पूर्ण रूप से किये जाने व उसका आनन्द लेना संभव नहीं होता है। प्रभारी डा. प्रगति भटनागर ने राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के उद्देश्यों के बारे में बताते हुये सात दिनों के शिविर के कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी तथा गोद लिये गांवों में किये जाने वाले कामों के बारे में बताया।

गीतिका द्वारा दिया बेटी बचाओ का संदेश

संयोजक डा. जुगल किशोर दाधीच ने बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्यों में जिस समुदाय में काम कर रहे हैं, उसे समझना, समुदाय की समस्याओं को जानना और उन्हें हल करने के लिए उनको शामिल करना, सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारी की भावना का विकास करना, समूह स्तर पर जिम्मेदारियों को बांटने के लिए आवश्यक क्षमता का विकास करना, आपातकाल और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए उनको विकसित करना, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता का अभ्यास करना आदि हैं, जिन्हें रूचिपूर्वक हंसते-खेलते हुये प्राप्त करना है। कार्यक्रम में छात्रा पूजा ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ सम्बंधी संदेश देते हुये एक राजस्थानी गीतिका प्रस्तुत करते हुये लिंगभेद सम्बंधी सामाजिक विसंगतियों को प्रदर्शित किया। छात्रा दिव्यता कोठारी ने एनएसएस की योजना, कार्यक्रम व उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। रचना सोनी व कुसुम नाई ने प्रारम्भ में एनएसएस गीत प्रस्तुत किया। स्वयंसेविका प्रतिष्ठा कोठारी व दक्षता कोठारी ने संयुक्त रूप से संयोजन किया। इस कार्यक्रम के बाद सभी छात्राओं को एक प्रेरणास्पद फिल्म ''आई एम कलाम'' दिखाई गई।

राष्ट्रीय मुद्दों पर आधारित गायन प्रतियोगिता में स्नेहा पारीक प्रथम रही

एनएसएस के सात दिवसीय शिविर के दूसरे दिवस सामाजिक व राष्ट्रीय मुद्दों पर आधारित गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 15 प्रतिभागी छात्रायें सम्मिलित हुई। प्रथम स्थान पर स्नेहा पारीक, द्वितीय स्थान पर सोनम कंवर व तृतीय स्थान पर सरिता शर्मा रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। प्रतियोगिता की निर्णायक सोनिका जैन व अभिषेक चारण थे। कार्यक्रम का संचालन नगीना बानो ने किया। शिविर के प्रथम चरण में स्वयंसेविका छात्राओं के व्यक्तित्व विकास के लिये संचार कौशल पर एक कार्यशाला का

आयोजन किया गया। कार्यशाला में फोनेटिक्स पर छात्राओं को प्रायोगिक अभ्यास करवाया गया। इसके अलावा छात्राओं को दिखाई गई फिल्म 'आई एक कलाम' पर चर्चा का आयोजन किया गया।

स्वयसेविकाओं को दी क्रोध नियंत्रण की प्रेरणा

इस सात दिवसीय शिविर के अन्तर्गत आयोजित एक विशेष मोटीवेशन प्रोग्राम के तहत आचार्य सत्यनारायण पाटोदिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि आत्म नियंत्रण रखने से बहुत सारी समस्याओं पर विजय पाई जा सकती है। अपने आप पर काबू करना सबसे मुश्किल कार्य होता है, लेकिन यह असंभव नहीं है। आचार्य पाटोदिया ने कहा कि क्रोध समस्त समस्याओं की जड़ होता है इसलिये, सबसे पहले अपने क्रोध को काबू में करना सीखो। क्रोध पर काबू रखने के लिये उन्होंने विभिन्न प्रयोग बताये तथा कहा कि इस तकनीक से क्रोध को नियंत्रण किया जा सकता है। शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कहा कि एनएसएस की स्वयसेविकाओं को तो क्रोध रखना ही नहीं चाहिये, तभी वे राष्ट्रसेवा में सफल हो सकती हैं। कार्यक्रम में स्वयंसेविकाओं को पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित एक डॉक्युमेंटरी फिल्म दिखाई गई।

एनएसएस समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर ने बताया कि इस शिविर के दौरान आयोजित आशु भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्नेहा पारीक, द्वितीय नगीना बानो और तृतीय स्थान पर दिव्यता कोठारी रही। शिविर के

दौरान डा. सोमवीर सांगवान ने फोनोटिक्स के बारे में एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम का संचालन डा. जुगलकिशोर दाधीच ने किया।

छात्राओं को सड़क सुरक्षा की जानकारी दी व परिसर में किया रंग-रोगन

शिविर में पांचवें दिन सड़क सुरक्षा कार्यक्रम एवं परिसर

सौंदर्यकरण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। एनएसएस गीत से प्रारम्भ करके कार्यक्रम में प्रतिष्ठा कोठारी ने सड़क सुरक्षा सम्बंधी नियमों की जानकारी दी और यातायात चिह्नों की जानकारी देते हुये यातायात व्यवस्था को सुचारु रखने एवं उसे सुरक्षित बनाने के उपाय बताये। छात्राओं ने सड़क सुरक्षा गीत भी प्रस्तुत किया। स्वयंसेविका रचना सोनी, डिम्पल सोनी, कोमल शर्मा व कीर्ति पारीक ने एक नाटिका प्रस्तुत करते हुये सड़क सुरक्षा का संदेश दिया। कार्यक्रम में प्रभारी डा. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण व सोनिका जैन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अगले चरण में परिसर सौंदर्यकरण के सम्बंध में छात्राओं ने आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्रांगण में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में रंग-रोगन का कार्य किया गया।

वाहन-चालन में गलती को सरकार व नियति दोनों ही माफ नहीं करते

प्रशिक्षु आरपीएस अधिकारी धन्नाराम ने कहा है कि जीवन को

सार्थक बनाने के लिये अनुशासन बहुत आवश्यक है और इसी से राष्ट्र की सेवा संभव है। यातायात के नियमों का पालन करना इसी अनुशासन में शामिल है। सड़क दुर्घटनाओं से बचाव के लिये स्वयं को लापरवाह होने से

बचायें और सदैव सावधानी रखें। वे यहां राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के सात दिवसीय शिविर में सड़क सुरक्षा पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कानून देश के सुसंचालन के लिये होते हैं। उनका पालन आवश्यक है। उन्होंने आवश्यक नियम बताते हुये कहा, यातायात के नियमों का पालन नहीं करने और लापरवाही करते हुये गलती करने पर कानून माफ नहीं करता तो नियति भी माफ नहीं करती और व्यक्ति केवल अपना ही नहीं, बल्कि अपने परिवार, समाज और राष्ट्र का भी नुकसान करता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि सेवा परायेपन को समाप्त करती है। इससे अपनत्व जुड़ता है और अहं पीछे छूटता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र सेवा में कभी चूक नहीं होनी चाहिये, तो यातायात के नियमों के पालन में भी चूक नहीं होनी चाहिये। जिन्दगी में थोड़ी सी चूक जिन्दगी छीन लेती है। स्वयंसेविका करिश्मा खान ने यातायात के नियम समझाये और उनका पालन करने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम के अंत में एनएसएस के प्रभारी डा. जुगल किशोर दाधीच ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रतिष्ठा कोठारी ने किया।

रैली निकाल दिया संदेश

राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविकाओं ने इस कार्यक्रम के पश्चात् रैली निकाल कर आम लोगों को जागरूकता का संदेश दिया। इस रैली को विश्वविद्यालय परिसर से पुलिस अधिकारी धन्नाराम व प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी व प्रो. अनिल धर ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। एनएसएस प्रभारी डा. प्रगति भटनागर के नेतृत्व में यह रैली छट्ठी पट्टी, हरियाणा भवन, पहली पट्टी, सदर बाजार, गांधी चौक, राहूगेट आदि से होते हुये वापस विश्वविद्यालय लौटी।

साहस व मजबूत संकल्प से करें मुसीबत का मुकाबला

राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाईयों के संयुक्त रूप से आयोजित इस सात दिवसीय शिविर के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि छात्राओं को मजबूत संकल्प के साथ साहसपूर्वक समस्त चुनौतियों का मुकाबला करना चाहिये। कोई भी मुसीबत कभी कह कर नहीं आया करती है, लेकिन अपनी क्षमता ऐसी होनी चाहिये कि हम हर मुसीबत से टकराने में पीछे नहीं हटें। कार्यक्रम में अतिथि जगदीश यायावर ने कहा कि सात दिनों में जो कुछ सीखा, उसका उपयोग अपने जीवन में भी करना चाहिये। प्रभारी डा. जुगल किशोर दाधीच ने कहा कि जहां सेवा का काम होता है, वहां कर्तव्य निभाना सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। प्रभारी डा. प्रगति भटनागर ने सात दिनों में सीखे गये अनुभवों को अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में उतारने के लिये प्रेरित किया।

आशुभाषण व गायन में स्नेहा प्रथम रही

कार्यक्रम में छात्रा दक्षता कोठारी ने महिलाओं की सुरक्षा से सम्बंधित टिप्स बताये। पूजा चौधरी ने महिलाओं के सशक्तिकरण के बारे में बताया। सपना स्वामी ने बेटी-बचाओ, बेटी-पढ़ाओ का संदेश अपनी कविता के माध्यम से दिया। सोनम, नगीना, रेहाना बानो, शाहीन मोयल, अनीस व रिद्धि ने अपने शिविर के अनुभवों को साझा किया। शिविर के दौरान रोचक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया, जिसमें विजेता रही स्वयंसेविकाओं को इस समारोह में पुरस्कृत किया गया। प्रभारी डा. प्रगति भटनागर ने बताया कि एकल गायन प्रतियोगिता में स्नेहा पारीक प्रथम, सोनम कंवर द्वितीय व सरिता शर्मा तृतीय स्थान पर रही। आशुभाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर स्नेहा पारीक, द्वितीय नगीना बानो एवं तृतीय दिव्यता कोठारी रही। पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम आरती सिंहारिया, द्वितीय सोनम कंवर व तृतीय मुस्कान बानो रही। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी व जगदीश यायावर ने इन सभी को पुरस्कार प्रदान किये।

प्रारम्भ में छात्रा नगीना बानो ने शिविर के सात दिनों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अंत में योगिता शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन हेमलता सैनी व कुसुम ने किया।

एनसीसी की छात्राओं का सात दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

संस्थान में संचालित 3 राज गर्ल्स बटालियन एनसीसी (नेशनल कैडेट कोर) की कैडेट्स को दिये जा रहे सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का 1 फरवरी को समापन किया गया। 3 राज गर्ल्स बटालियन जोधपुर के सुबेदार

आर. साहनी ने एनसीसी से छात्राओं में आत्मविश्वास, साहस, शक्ति, राष्ट्रभक्ति की भावनाओं का संचार होता है तथा उनमें अनुशासन पैदा होता है। एनसीसी प्रभारी डा. जुगलकिशोर दाधीच ने बताया कि इस सात दिवसीय प्रशिक्षण में छात्राओं को सैद्धांतिक व व्यावहारिक दोनों प्रकार से प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिनमें लम्बी दौड़, लॉंग जम्प, आग से सुरक्षा, कदमताल, पर्यावरण संरक्षण, सड़क सुरक्षा के नियम, आत्म-रक्षा के गुर आदि शामिल किये गये। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण में बी-प्रमाण पत्र की कुल 31 छात्रायें एवं सी- प्रमाण पत्र की कुल 5 छात्रायें भाग ले रही थी। इस प्रशिक्षण के पश्चात इन सभी छात्राओं की लिखित परीक्षा एनसीसी मुख्यालय जोधपुर में ली गई।

एनएसएस की स्वयंसेविकाओं ने चलाया स्वच्छता अभियान

एक दिवसीय शिविर

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाईयों के संयुक्त तत्वावधान में 10 अप्रेल को आयोजित एक दिवसीय शिविर में स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस स्वच्छता कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश की त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सेवा योजना की स्वयंसेविकाओं को अपने घर-परिसर और मौहल्ले-शहर की सफाई व्यवस्था में भी रूचि लेनी चाहिये तथा देश को स्वच्छ बनाने के राष्ट्रीय अभियान में अपनी भूमिका निभानी चाहिये। स्वच्छता अभियान एन.एस.एस. के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. जुगल किशोर दाधीच एवं डॉ. प्रगति भटनागर के निर्देशन में किया गया। इस कार्यक्रम में सभी स्वयं सेविकाओं, छात्राओं एवं शिक्षकों का योगदान रहा। सफाई अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय परिसर के खेल मैदान, पार्किंग क्षेत्र आदि के साथ सम्पूर्ण परिसर की सफाई की गई।

एन.एस.एस. का एक दिवसीय शिविर

आत्मरक्षा का नियमित प्रशिक्षण प्राप्त करें महिलायें- चौधरी

उपखंड अधिकारी मुकेश चौधरी ने कहा है कि महिलाओं-लड़कियों के साथ बढ़ती छेड़छाड़ की घटनाओं से निपटने के लिये आवश्यक है कि महिलायें आत्मरक्षा का नियमित प्रशिक्षण प्राप्त करें। इससे उनमें आत्मविश्वास बढेगा और वे स्वयं मुकाबला करने में सक्षम बनेंगी। उन्होंने 8 मार्च को यहां जैन विश्वभारती संस्थान की एनएसएस की दोनों ईकाइयों के एक दिवसीय संयुक्त शिविर का शुभारम्भ करते हुये एवं अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में वे मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित छात्राओं को अपने केरियर के सम्बंध में भी मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने कहा कि सभी छात्रायें अभी से अपने केरियर के लिये लक्ष्य तय करके आगे बढें। केरियर हमेशा अपनी रुचि के अनुसार चुनना चाहिये, ताकि आसानी से बिना तनाव के उस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

नारी पूर्णता की द्योतक है

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अपने सम्बोधन में कहा कि जीवन में तीन आवश्यकतायें होती हैं- ज्ञान, समृद्धि और शक्ति। इन तीनों क्षेत्रों में अधिष्ठात्री के रूप में महिलाओं का ही आधिपत्य है। ज्ञान के लिये देवी सरस्वती, समृद्धि व ऐश्वर्य के लिये देवी लक्ष्मी और शक्ति के लिये दुर्गा की उपासना करनी होती है। नारी की शक्ति व क्षमता का लोहा पुरुष को मानना ही पड़ेगा। आज भी किसी भी मुकाम पर नारी पुरुष से पीछे नहीं हैं। एनएसएस की सेवा भावना का जिक्र करते हुये उन्होंने कहा कि सेवा से अपनत्व बढता है और परस्परता बढती है।

महिला सशक्तीकरण आवश्यक

कार्यक्रम के प्रारम्भ में एनएसएस की समन्वयक डा. प्रगति भटनागर ने राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों तथा एक दिवसीय शिविर व उसमें आयोजित किये जाने वाली गतिविधियों पर प्रकाश डाला। स्वयंसेविकाओं रूबीना व करिश्मा ने महिला दिवस के बारे में बताते हुये महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता बताई। प्रभारी समन्वयक डा. जुगलकिशोर दाधीच ने कार्यक्रम का संचालन किया।

उपखंड स्तरीय अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह आयोजित

पूरे विश्व को योग-शिक्षक प्रदान कर रहा है जैविभा विश्वविद्यालय

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर यहां 21 जून को जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) एवं जैन विश्वभारती के संयुक्त तत्वावधान में उपखंड प्रशासन के साथ मिलकर यहां आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर में योग समारोह का आयोजन किया गया। आयुष विभाग और जैविभा संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के निर्देशन में किये गये इस आयोजन में योग के विद्यार्थियों के प्रस्तुतिकरण के साथ नागरिकों एवं विद्यार्थियों ने विभिन्न योगासन, यौगिक क्रियायें, प्राणायाम व ध्यान के प्रयोग किये, जिनका निर्देशन डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने प्रदान किया। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री जीवनमल मालू, विश्वविद्यालय के कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, पंचायत समिति के विकास अधिकारी हरफूल सिंह चौधरी, आयुष विभाग के डॉ. जेपी मिश्रा आदि ने सहभगिता की और सम्बोधित करते हुये योग की महता पर प्रकाश डाला और नियमित योगाभ्यास के लिये सबको प्रेरित किया।

तीस सालों से योग विभाग संचालित है विश्वविद्यालय में

समारोह में प्रशासन की ओर से विकास अधिकारी हरफूल सिह चौधरी ने कहा कि भारत में हजारों साल से प्रचलित योग को आज पूरी दुनिया ने अपना लिया है और विश्व में सभी ने योग की उपयोगिता को स्वीकार किया है। कार्यक्रम में जैन विश्वभारती के संयुक्त मंत्री जीवनमल मालू ने कहा कि जैन विश्वभारती संस्थान का योग विभाग पूरे विश्व को योग प्रशिक्षक प्रदान कर रहा है। संस्थान के कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने कहा कि योग को अपनाने से ही जीवन को सुखद बनाया जा सकता है। हमारे संस्थान में पिछले 30 वर्षों से योग विभाग अलग से काम कर रहा है। इस विभाग के विद्यार्थियों ने योग के क्षेत्र में विश्व भर में नाम किया है। ब्लॉक सांख्यिकी अधिकारी राजेन्द्र कुमार भाकर, ग्राम विकास अधिकारी रघुवीर सिंह चारण, रामरतन शर्मा, गिरधारीलाल राजपुरोहित, संस्थान के विताधिकारी आरके जैन, विजय कुमार शर्मा, जेपी सिंह, मोहन सियोल, पंकज भटनागर, निरंजन सांखला, दीपक माथुर, रमेशदान चारण, शरद जैन सुधांशु, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे और योगाभ्यास किया।

www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं की ओर से रमेश कुमार मेहता (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय - तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर में मुद्रित। सम्पादक - डॉ. समणी भास्करप्रज्ञा।